ओ३म्

ऋषिमना यः ऋषिकृत् स्वर्षाः (साम. 1179)

हम ऋषिमना होकर प्रभु की प्रभा को प्राप्त करें।

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का मुखपत्र

महर्षि पाणिनि-प्रभा

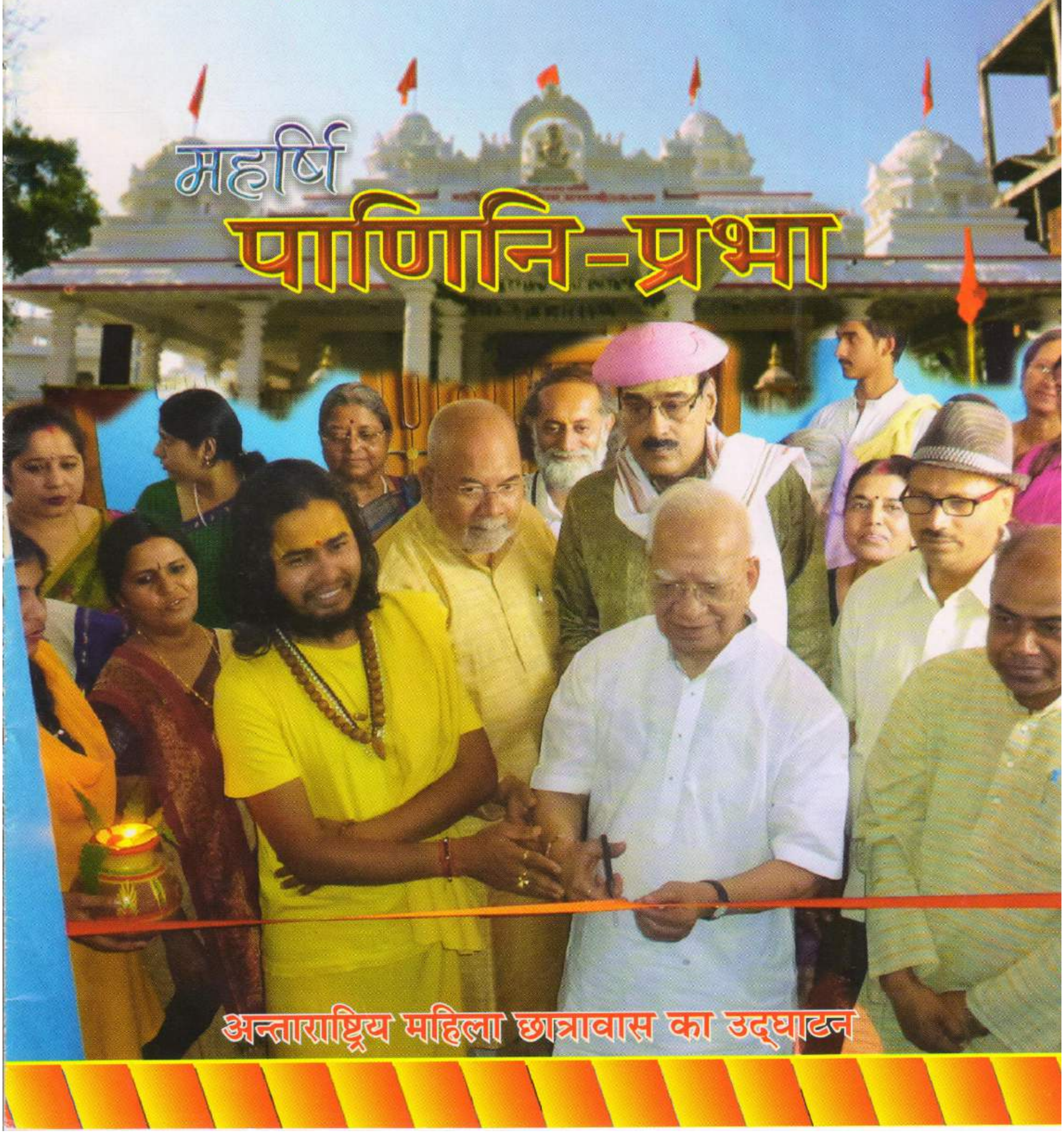

अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास का उद्घाटन

दिनांक 1 मई से 8 मई 2014

विद्यालय में आयोजित अष्ट दिवसीय वेद विज्ञान कार्यशाला के विभिन्न परिदृश्य

ओ३म्

महीयसी संस्थापिका
डॉ० प्रज्ञा देवी जी

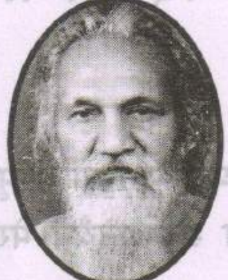

पूज्य गुरुवर्य
श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी

महीयसी संस्थापिका
अनुजा-आचार्या मेधा देवी

महर्षि पाणिनि-प्रभा

सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,११५	संयुक्तांक अप्रैल–जून., २०१४	वर्ष ८, अंक-२	चैत्र–ज्येष्ठ, वि.सं. २०७१

सम्पादिका
आचार्या नन्दिता चतुर्वेदी
मो०- 9235539740

◆

सहसंपादिका
डा० प्रीति विमर्शिनी
मो0- 9235604340

◆

प्रकाशक
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
पो०- महमूरगंज, तुलसीपुर,
वाराणसी– 221010 (उ0प्र0)
फोन : (0542) 6452340

◆

पत्रिका सदस्य
वार्षिक : 150/-
आजीवन : 1500/- (दस वर्ष)

प्रभा–रश्मयः

1. वेद-वाणी– स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् – आचार्या नन्दिता चतुर्वेदी 2–4
2. सम्पादकीयम् – श्रम एव जयते – आचार्या नन्दिता चतुर्वेदी 5–7
3. विशेष सूचना– –8
4. इतिवृत्तम्– – डॉ. प्रीति विमर्शिनी 9–13
5. एक अविस्मरणीय संस्मरण– – श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव –14
6. विश्व को आर्यों की देन– – स्वामी शिवानन्द सरस्वती 15–18
7. ज्योतिष और धर्मशास्त्र – – आचार्य हरिहर पाण्डेय 19-21
8. स्वतन्त्रता संग्राम में– – आशा रानी व्होरा 22-26
9. ब्राह्मण सावधान! – डॉ. सम्पूर्णानन्द 27-29
10. हम भारत से क्या सीखें – – प्रो. मैक्समूलर 30-32

◆

वेद-वाणी

स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्–

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन्भूतात्पुरुषं यमाय।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि॥

(अथर्व.. 6/133/3)

यह मन्त्र अथर्ववेद का है। इस सूक्त का देवता मेखला है। यज्ञोपवीत के अनन्तर वेदारम्भ संस्कार कराते हुए आचार्य ब्रह्मचारी के कटि प्रदेश (कमर) में मेखला को अपने हाथों से बाँधता है। और उसे वेदमन्त्र के माध्यम से यह निर्देश देता है कि तू इस मेखला की रक्षा इसे अपनी बहन मान कर करना–

स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्।

यह सुभगा है यह तेरे जीवन में सौभाग्य का मूल आधार है। कटिप्रदेश में मेखला बाँधने का तात्पर्य है कमर कसकर रहना। यह इस शरीर में रीढ़ की हड्डी मेरुदण्ड को सीधा रखकर कार्य करने अध्ययन करने की दिशा को इङ्गित करती है। वैदिक परम्परा में ऋषियों ने आचार्यों ने मेखला का बन्धन दीर्घायुष्य के लिये परब्रह्म साक्षात्कार के लिये मेधा बुद्धि की प्राप्ति के लिये किया था। वेद कहता है–

यां त्वा पूर्वे भूतकृतः ऋषयः परिबेधिरे।
सा त्वं परिष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले॥

(अथर्व. 6/133/5)

हे मेखले! जिस तुझ को **भूतकृतः** पञ्चमहाभूतों के साक्षात्कर्त्ता ऋषि दीर्घायुष्य के लिये बाँधते रहे हैं वह तू मेरा भी आलिङ्गन कर जिससे मैं भी दीर्घायु और साक्षात्कृतधर्मा ऋषि पदवी को प्राप्त कर सकूँ। इसी सूक्त में कहा–

श्रद्धाया दुहिता तपसोऽधि जाता
स्वस ऋषीणां भूतकृतां बभूव।
सा नो मेखले मतिमाधेहि मेधामथो
नो धेहि तप इन्द्रियं च॥

(अथर्व. 6/133/4)

यह मेखला श्रद्धा का दोहन करने वाली है तप से तपस्वियों के सान्निध्य से प्रकट होती है। यह **भूतकृतां =** जो वर्त्तमान में नहीं हैं ऐसे पूर्व जन्म के जन्म जन्मान्तर के रहस्यों को जानने की क्षमता वाले साक्षात्कर्त्ता ऋषि हैं उनकी बहन है, वे सदा बहन के समान इस मेखला को अपने कटि प्रदेश पर सुरक्षित धारण करते आये हैं वह तू मेखला मुझे मेरे अन्दर भी मति-मननशीलता तथा मेधा बुद्धि जिससे कि आत्मतत्व तक की प्राप्ति हो सकती है, उस परमेश्वर के साथ हमारा संग (मेधृ मेधायां संगमे च) हो सकता है उसे धारण करा साथ ही उसके अनुकूल इन्द्रियों को तप से युक्त तपस्वी जितेन्द्रिय बना।

प्रकृत मन्त्र में मेखला धारण करने का इच्छुक ब्रह्मचारी अपने कठिन व्रत को इन शब्दों में व्यक्त करता है–

यत् अहं = जो कि मैं **मृत्योः ब्रह्मचारी** = मृत्यु का ब्रह्मचारी **अस्मि** = हूँ मैं **यमाय** = यम नियमों के पालन के लिये **भूतात्** = पाञ्चभौतिक संसार से संसार के मध्य सूत्रात्मा रूप में विराजमान **पुरुषं** = परमपुरुष की **निर्याचन्** = निश्चयेन याचना करता हुआ। उसे प्राप्त करने के लिये मैं **एनम्** (आत्मानम्) = इस अपनी आत्मा को स्वयं को (ब्रह्मणा तपसा श्रमेण अनया मेखलया (च) सिनामि) **ब्रह्मणा** = वेदज्ञान पूर्वक **तपसा** = तप (द्वन्द्वसहन) पूर्वक **श्रमेण** = श्रम पूर्वक (श्रमु तपसि खेदे च) **अनया मेखलया** = इस मेखला से स्वयं को सिनामि = बाँधता हूँ कटिबद्ध करता हूँ परब्रह्म को प्राप्त करना मेरा लक्ष्य है। क्योंकि आज मैं इस सत्य से अवगत हो गया हूँ कि यह पांचभौतिक संसार हिरण्मय चमकीले आवरण से आच्छादित है– **हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्** यह वेद की ऋचा है। सत्य तो इसके भीतर छिपा है जिसे भेद कर ही प्राप्त किया जा सकता है।

मन्त्र में ब्रह्मचारी का संकल्प अद्भुत है वह कहता है इस सत्य की प्राप्ति के लिये मैं मृत्यु से भी नहीं डरता मैंने तो मृत्यु को ही अपना आचार्य मान लिया है मेरी घोषणा है– मैं मृत्यु का ब्रह्मचारी हूँ। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है–

गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।

धर्म का आचरण इतनी तत्परता से करे जैसे मृत्यु के द्वारा गृहीतकेश हो कि यदि तूने इस धर्म का पालन नहीं किया तो तू सीधा मृत्यु के गर्त्त में जायेगा। मेरे देश में देशवासियों के अन्दर ऐसी ही सत्यनिष्ठा होती थी जिनके उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है।

वेद में एक सूक्त है– **ब्रह्मचारी** वहाँ भी यही कहा है कि–

ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्त्ति।
(अथर्व. 11/5/4)

श्रम और तप के साथ-साथ समिधा और मेखला को धारण करके ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यह भी सत्य है कि– किसी भी कठिन संकल्प को पूर्ण करने के लिये प्रथम ब्रह्मचारी होना एकनिष्ठ जितेन्द्रिय होना भी अति आवश्यक है द्वितीय–समिधा बन कर स्वयं को प्रस्तुत करना। समिधा (लकड़ी) वह पदार्थ है जो स्वयं प्रकाश रहित है वह किसी दीप्तिमान् पदार्थ से आचार्य से स्वयं को समिद्ध (दीप्त) करता है पश्चात् अन्यों को समिद्ध करता है। समिधा बनने का तात्पर्य हुआ सीखने का ज्ञान प्राप्त करने का भाव होना। सौम्यता विनम्रता तथा धीरता गुण से संयुक्त होना पश्चात् उस सीख को ज्ञान को प्राप्त कर लोक का पालन करना, लोक को तृप्त करना यह भी आवश्यक है। किसी भी प्राप्ति का लाभ केवल अपने लिये निहित स्वार्थ की पूर्ति के

लिये नहीं अपितु संसार के लिये होना चाहिये।

इस प्रकार ब्रह्मचारी– मनुष्य यदि लोक लोकान्तर को जानना चाहता है और अपने ज्ञान से देश-विदेश ही नहीं लोक-लोकान्तर को पूर्ण करना चाहता है, सम्पूर्ण भूमण्डल में अपने सन्देश को फैलाना चाहता है तो आवश्यक है कि वह स्वयं का निर्माण करे स्वयं समिद्ध हो स्वयं श्रम से युक्त तपस्वी हो और इसके लिये मेखला धारण करना अति आवश्यक है। मेखला एक बहिन के समान बड़ी सहजता से हमारे लक्ष्य प्राप्ति की सहायिका है। शास्त्रों में मेखला को वज्र कहा है– **वज्रो वै मेखला** (काठ. 23/4) ऊर्क् कहा है– **ऊर्ग् वै मेखला** (काठ. 36/1)। ऊर्क् का अर्थ है पराक्रम यह हमारे लक्ष्य सिद्धि में हमें दृढ़ रहने वज्र की तरह बनने का साहस प्रदान करती है। हमें ऊर्ध्वरेता बनाती है।

उपनिषदों में ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति चाहे वह राजा हो गृहस्थी हो ब्रह्मचारी हो तीन समिधायें लेकर ही आचार्य के पास जाता था। मृत्यु और ब्रह्मचारी का सम्बन्ध बहुत पुराना है वेद में जहाँ आचार्य को **वरुण** = अविद्यानिवारक, **सोम** = चन्द्रमा के समान शान्ति आह्लाद प्रसन्नतादायक, **ओषधि** = कुसंस्कारशोधक, **पयः** = अमृत पान कराने वाला कहा है वहीं उसे सर्वप्रथम मृत्यु कहा है–

आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः॥

(अथर्व. 11/5/14)

नचिकेता भी अध्यात्म ज्ञान के लिये यमाचार्य मृत्यु के पास जाता है। मृत्यु का साम्मुख्य करना अपने आप में कठिन संकल्प, संकल्प की दृढता का द्योतक है। जो संकल्प के बाधक आकर्षणों को हेय समझता है। यमाचार्य ने भी नचिकेता के सामने प्रलोभनों के अम्बार खड़े कर दिये कि– तू शतायु (सौ वर्ष की आयु वाले) पुत्र पौत्रों को माँग ले, बहुत से हाथी घोड़ा गाय बकरी सोना माँग ले, बहुत बड़ा राज्य माँग ले, तू यथेच्छ सभी कामनायें पूर्ण होने का वर माँग ले, और जो कुछ मर्त्यलोक में दुर्लभ है वह सब माँग ले, सुन्दर स्त्रियाँ नाच गाना बाजा कुछ भी माँग ले किन्तु मृत्यु के रहस्य के विषय में मत पूछ, कहने पर भी वह बालक–

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीत॥

(कठ.उ. 1/26)

ये सब श्वोभावाः (कल तक रहने वाले) हैं, ये इन्द्रियों का तेज हरण करने वाले हैं, ये जितने प्रलोभन हैं वे सब तुझे ही मुबारक हों, **वरस्तु मे वरणीयः स एव** मेरा वरणीय वर तो वही है कुछ और नहीं। ऐसी दृढ़ता जो मृत्यु को ही अपना आचार्य तथा मेखला को ही अपनी बहन मान कर पूर्ण संयम का जीवन जीते हैं उनमें ही होती है, हो सकती है। ●

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

सम्पादकीयम्

श्रम एव जयते–

भारत के दुर्दिन छँट गये, अच्छे दिन आने वाले हैं, नारे से आरम्भ हुआ प्रचार अभियान अच्छे दिन आ गये में परिवर्तित होकर चकित कर गया सबको। यह शक्ति है संकल्प की पुरुषार्थ की। मुझे प्रसन्नता है मैं मेरा विद्यालय परिवार भी उनकी इस विजय यात्रा का सहभागी रहा है दो बार विजय यज्ञ पश्चात् विजयोत्सव मनाकर, जिसे विभिन्न चैनलों व समाचार पत्रों ने दिखाया भी छापा भी। उन दिनों मेरे पास प्रायः बाहर औरंगाबाद, दिल्ली, गाजियाबाद, अहमदाबाद, बाम्बे आदि महानगरों से महत्वपूर्ण लोगों के फोन आते रहे– नन्दिता जी बनारस में क्या हो रहा है? आप क्या कर रही हैं? आदि आदि। कोई तो मैं आ रहा हूँ प्रचार करने, मैंने कहा– आपकी कोई आवश्यकता नहीं है बनारस वाले बहुत जागृत हैं। फिर बोले- अच्छा तो फिर क्या हो रहा है बनारस में? मैंने कहा- हो क्या रहा है मोदी जी आने वाले हैं नामाङ्कन करने, नामांकन करेंगे, चुनाव जीतेंगे और प्रधानमंत्री बनेंगे और क्या? वे बहुत हँसे, बोले– वाह! आपने तो तीन वाक्य में सारी कहानी ही खत्म कर दी। मैंने कहा– हाँ बिल्कुल होना ही यही है। और हुआ भी यही, खूब आरोप प्रत्यारोप हुए पर मोदी जी की भाषण शैली वाक्पटुता राष्ट्रवादी विचारों के सब कायल हो गये इसके साथ-साथ उनकी भावप्रवणता ने भी सबको निहाल कर दिया जिसे सारी दुनियाँ ने देखा। उनका माँ के प्रति गंगा के प्रति सम्मान, सदन को मन्दिर समझ कर नतमस्तक हो सिर नवा कर सदन में प्रवेश करना, सबका आभार मानना, परिवारवाद भाई-भतीजावाद का बहिष्करण। आते ही पहला कार्य विदेशी पैसा मँगाने के लिये एस.आई.टी. गठित करना, 365 दिन 24 घण्टे काम करने आदि की घोषणा ने सबको चकित व मुग्ध कर दिया है।

सचमुच भारत के दुर्दिन छँट जायेंगे यह एहसास होने लगा है। **श्रम एव जयते** उनका यह नारा पूर्ण वैदिकता से ओत-प्रोत है। हमारे यहाँ सम्पूर्ण मानवता को मानव जाति को श्रम ही नहीं आश्रम में बाँटा गया है आप जहाँ भी जिस भी आश्रम में रहें आपकी जीवन्तता श्रम में है पुरुषार्थ में है श्रम हीनता में नहीं। ब्रह्मचारी से लेकर गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी तक सबको श्रम करना है। श्रम करने वाला व्यक्ति तपस्वी होता है जहाँ तप होगा वहाँ त्याग होगा वहाँ समर्पण वहाँ सत्य निष्ठा ये सद्गुण अपने आप विकसित होने लगेंगे। हमारे भारत देश की यही पहचान थी इसीलिये वह विश्व का गुरु कहा जाता था। आज भी विश्व भारत के अनोखेपन से अध्यात्म से आकर्षित है।

वेद कहता है परमेश्वर ने सृष्टि रचना का उपक्रम किया तो श्रम और तप से ही उसने लोक लोकान्तरों को उत्पन्न किया। ऋत, सत्य, तप, राष्ट्र, श्रम, धर्म, कर्म, भूत, भविष्यत्, वीर्य, लक्ष्मी, बल सबको अन्तर्निहित कर परमेश्वर ने इस सृष्टि को उत्पन्न किया। वेद में एक सुन्दर राष्ट्र की परिकल्पना करते हुए जो कुछ कहा है वह बहुत महत्वपूर्ण है वहाँ सर्वप्रथम श्रम और तप की ही महिमा का वर्णन करते हुए बड़े स्पष्ट शब्दों लिखा है–

श्रमेण तपसा सृष्टाः ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिताः।
सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता॥

(अथर्व. 12/5/1-2)

श्रम तथा तप के द्वारा ही इस संसार का विश्वराष्ट्र का निर्माण हुआ है। यह संसार ऋत के नियमों पर आधारित है ये नियम दैवी हैं स्वयं परमेश्वर के द्वारा निर्मित हैं इनका उल्लंघन कोई नहीं कर सकता यदि कोई करने की कोशिश भी करेगा तो वह ग्लोबल वार्मिंग सूनामी जैसी आपदाओं से बच नहीं सकता। यह संसार सत्य से आवृत है, सत्य पर टिका हुआ है (**सत्येनोत्तभिता भूमिः** ऋ. 10/85/1) और जहाँ सत्य होगा वहाँ श्री और यश अपने आप उसे घेर लेंगे। मोदी जी की कार्य शैली में सत्यनिष्ठा है उनसे बड़ी आशायें व अपेक्षायें हैं। अरसे बाद भारत का सौभाग्य जागा है जो मोदी जैसा तपस्वी ब्रह्मचारी नायक इस देश को प्रधानमंत्री के रूप में मिला है। ब्रह्मचर्य का तप बहुत बड़ा तप है। वेद कहता है–

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।

(अथर्व. 11/5/17)

राजा राष्ट्र की सम्पूर्ण रक्षा ब्रह्मचर्यपूर्वक तप के द्वारा ही करता है। उनकी सत्यनिष्ठा उन्हें श्री और यश से आवृत कर भारत को पुनः विश्व गुरु की ऊँचाई तक ले जायेगी यह हमारी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है।

इस अवसर पर उनकी पत्नी **यशोदा बेन** के त्याग, तपस्या उनके पातिव्रत्य को कहीं से भी कम नहीं आँका जा सकता। उन्हीं के मूक तप त्याग समर्पण और दूरी ने मोदी जी को आज यहाँ तक पहुँचाया है। भारतीय नारियाँ ही ऐसा कठिन तप कर सकती हैं यह समर्पण की पराकाष्ठा है पातिव्रत्य का उच्चतम प्रतिमान है जहाँ कोई गिला-शिकवा नहीं पति की आज्ञा पति का व्रत ही उसका व्रत है। आज भी ऐसी प्रदर्शन से दूर अनुव्रता पतिव्रता नारियाँ सचमुच इस धरती पर ही जन्म ले सकती हैं जो कभी पति के जीवन में अवरोध बनी ही नहीं। कौन पूछता, कौन जानता जसोदा बेन के इस मूक समर्पण को यदि आज मोदी जी इस ऊँचाई पर न पहुँचे होते। धन्य हो जसोदा बेन! आपने एक बार फिर इस धरती को अपने तप

त्याग से नारियों के गौरव को बढ़ाया है। संसार के सामने **न स्वैरी स्वैरिणी कुतः** जब स्वैरी (स्वेच्छाचारी) पुरुष ही नहीं होगा तो स्वैरिणी नारी कैसे हो सकती है राजा अश्वपति के इस उद्घोष को सत्य सिद्ध करके दिखाया है। अस्तु।

वेद कहता है–

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता।
यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्॥

(अथर्व. 12/5/3)

हमारा राष्ट्र हमारे राष्ट्रवासी स्वधा से परिहित हों। स्वधा कहते हैं अन्न को, और वह भी पितरों के लिये दिये जाने वाले अन्न को वेद में स्वधा कहा है। पितर जीवित को कहते हैं मृत को नहीं, अन्नादि का उपभोग शरीर करता है आत्मा नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि इस राष्ट्र के वासी अपने वृद्ध असहाय, वानप्रस्थी संन्यासी जैसे जो स्वयं अन्नादि का अर्जन करने में असमर्थ हैं उनका अन्न घृत वस्त्रादि से सम्मान करने वाले हों और वह भी श्रद्धा से पर्यूढ होकर। जो श्रद्धावान् होता है वही समर्पित होता है वही एकनिष्ठ होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

तीसरी बात इस देश के वासी दीक्षा से गुप्त रक्षित हों। दीक्षा व्रत से संकल्प से प्राप्त होती है जो दीक्षित होता है व्रती होता है वह धुन का धनी होता है तपस्वी होता है दुर्व्यसनी आरामपरस्त नहीं। आगे कहा इस देश के वासी यज्ञ में प्रतिष्ठित हों। यज्ञ का बहुत व्यापक अर्थ है। अध्यात्म यज्ञ है देवयज्ञ है पितृयज्ञ अतिथियज्ञ प्राणिमात्र के प्रति किया जाने वाला बलिवैश्वदेवयज्ञ ये पञ्चमहायज्ञ तो आवश्यक हैं ही प्रत्येक मनुष्य के लिये। इसके अतिरिक्त सबके पृथक्-पृथक् जैसे ब्राह्मण-ज्ञानयज्ञ में प्रवृत्त हों जिससे राष्ट्र का कोई बच्चा अशिक्षित न हो यह दायित्व है ब्राह्मण का। क्षत्रिय का यज्ञ राष्ट्र यज्ञ है वह राष्ट्र का प्रहरी बने उसकी सुरक्षा में प्रवृत्त हो, वैश्य के लिये समृद्धि यज्ञ है– राष्ट्र धन-धान्य से समृद्ध हो राष्ट्रवासी भूखे नंगे न हों यह दायित्व वैश्य का है। शूद्र का यज्ञ सेवा है वानप्रस्थी, संन्यासी, पुरोहित, राजा आदि सब सेवा धर्म से युक्त हों प्रजा के हित साधन में तत्पर हों यह भाव है यज्ञ में प्रतिष्ठित होने का। अन्यथा उस राष्ट्र और उसके अधिपति राजा से सूनृता, वीर्य, पुण्या लक्ष्मी, ओज, तेज, साहस, बल, पराक्रम, श्री, धर्म, यश, धन, प्रजा, पशु, कीर्त्ति आदि सब **अपक्रामन्ति** दूर भाग जाते हैं, कहा है। और यावन्मृत्यु– मृत्युपर्यन्त जब तक जीवन है तब तक इन वैदिक मर्यादाओं का आज्ञा का आदेश का सत्यनिष्ठा से अनुपालन करने वाले राजा और राष्ट्रवासी हों तभी राष्ट्र राष्ट्र कहलाने के योग्य दीप्तिमान् बनता है।

(शेष पृष्ठ 17 पर)

ओ३म्

पाणिनि महोत्सव

1, 2 नवम्बर

आगामी ~~24, 25, 26 अक्टूबर~~ 2014 **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** में **"पाणिनि महोत्सव"** का आयोजन करने का विचार है। जिसमें विभिन्न विषयों पर सभी कन्या गुरुकुलों व स्थानीय संस्कृत महाविद्यालयों के बीच **प्रतियोगिता** व **विशिष्ट सम्मेलन** का आयोजन भी होगा जिसका विस्तृत विवरण आप तक यथासमय पहुँच जायेगा।

***

गृह विज्ञान लेकर 10वीं कक्षा उत्तीर्ण कन्याओं के लिए सुनहरा अवसर

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में इस वर्ष नये सत्र (जुलाई) से गृह विज्ञान (होम साइंस) लेकर 10वीं कक्षा (हाई स्कूल) उत्तीर्ण छात्राओं के लिये विशेष प्रशिक्षण कोर्स **आई.टी.आई.** का आरम्भ हो रहा है। प्रवेश की इच्छुक कन्यायें यथाशीघ्र सम्पर्क कर सकती हैं।

***

अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास में प्रवेश प्रारम्भ

संस्कृत विषय लेकर **10वीं कक्षा** (हाई स्कूल) व शास्त्री (बी.ए.) उत्तीर्ण कन्यायें **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** में प्रवेश हेतु व स्वतन्त्र रूप से **वैदिक शिक्षा** प्राप्त करने हेतु सम्पर्क कर सकती हैं।

सम्पर्क सूत्र–
09235604340, 08924899440
09450081978

निवेदिका–
आचार्या नन्दिता शास्त्री
09235539740

इतिवृत्तम्

—डा. प्रीति विमर्शिनी

अहंकेतु रहं मूर्धा अहमुग्रा विवाचिनी

मैं अर्थात् नारी राष्ट्र की केतु = ध्वज हूँ। मूर्धा = मस्तक हूँ। वेद का यह मन्त्र सन्देश देता है कि नारी राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है, सुदृढ़ भित्ति है, विचार शक्ति है। तात्पर्य हुआ नारी निर्माण से राष्ट्र निर्माण है, नारी शिक्षा से राष्ट्र सुशिक्षित है क्योंकि एक सुसंस्कृत, सुशिक्षित नारी ही सुसंस्कृत सुशिक्षित सन्तान, परिवार, समाज तथा राष्ट्र तक निर्माण करने का सामर्थ्य रखती है यह सुतरां सत्य है। अतः नारियों का सुसंस्कृत सुशिक्षित एवं विदुषी होना आवश्यक है और यह बिना वेदाध्ययन के सम्भव नहीं। अतः नारी जगत् को वेद-वेदांगों की शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से पाणिनि कन्या महाविद्यालय में **अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास** की परिकल्पना की गयी जो आप सभी संस्कृत संस्कृति प्रेमी आर्य जनों के सहयोग से मूर्तरूप ले चुकी है। जिसके उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ 8 अप्रैल 2014 रामनवमी को लोकमंगल यज्ञ के साथ हुआ। मुख्य उद्घाटन कर्त्ता वाराणसी के प्रसिद्ध उद्योगपति समाजसेवी सुचिन्तक, स्वाध्यायशील **श्री दीनानाथ जी झुनझुनवाला** साथ में **श्री सन्तोष दास जी** महन्त सतुआ बाबा आश्रम, **श्री कुलपति तिवारी**, अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मन्दिर, आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् **डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री** अमेठी, श्री राजेश दुबे, डॉ. ताराशंकर मिश्र, श्रीमती सरिता लखोटिया, श्री आर.पी. गिनोडिया फादर चन्द्रकान्त मैत्री भवन आदि वाराणसी के अनेक गणमान्य नागरिकों के मध्य वैदिक ऋचाओं के सस्वर पाठ के साथ सम्पन्न हुआ। अनन्तर सायं 4:30 बजे से उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ ब्रह्मचारिणियों के वैदिक एवं सांगीतिक मंगलाचरण के द्वारा हुआ। जिसके मुख्य अतिथि अहमदाबाद से पधारे **डॉ. सत्यव्रत श्रीवास्तव** एवं धर्मपत्नी **श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव** थे आप दोनों ही स्वाध्यायशील प्रभुभक्त विद्यालय के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं स्नेह रखते हैं। आपके पू. पिता श्री हरिश्चन्द्र जी श्रीवास्तव का पू. आचार्या जी के समय से विद्यालय के साथ हार्दिक पारिवारिक स्नेह था।

लगभग एक साल पूर्व आपने अपने गृह पर आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ कराया था तब से निरन्तर यज्ञ कर रहे हैं, उसी समय आपने 4 कन्याओं की छात्रवृत्ति तथा छात्रावास में एक कमरे के निर्माण हेतु राशि प्रदान की थी। उद्घाटन समारोह में आपकी उपस्थिति ने समारोह की गरिमा बढ़ाई। समारोह में पधारे सभी विशिष्ट महानुभावों ने राष्ट्रोत्थान में नारी के महत्त्व की चर्चा करते हुए नारी शिक्षा एवं नारी उत्थान हेतु पाणिनि

कन्या महाविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की इस विद्यालय की संस्थापिका स्वनाम धन्या तपोनिष्ठा पू. आचार्या जी का स्मरण करते हुए उनके तप त्याग वैदुष्य की प्रशंसा की तथा वर्त्तमान समय में अपने प्रिय विद्यालय को वर्त्तमान आचार्या जनों की छत्रछाया में पल्लवित पुष्पित होते देख, उनके त्याग, समर्पण, वैदुष्य कुशल संचालन की सराहना की तथा अपना हर सम्भव सहयोग देने का वचन देकर आश्वस्त किया।

आचार्या नन्दिता शास्त्री जी ने उपस्थित जन समुदाय के समक्ष विद्यालय का गरिमामय परिचय दिया। नारियों के वेदाध्ययन की अनिवार्यता पर बल दिया तथा छात्रावास के निर्माण के उद्देश्य को बताते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कन्याओं के विविध सांस्कृतिक एवं शौर्यपूर्ण कार्यक्रमों की प्रस्तुति प्रशंसनीय रही। ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित **स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश व्याख्यान माला प्रतियोगिता** में प्रथम (**अपाला** मुम्बई), द्वितीय (**सुकृति** बक्सर), तृतीय (**श्यामा** लखनऊ) स्थान प्राप्त करने वाली ब्रह्मचारिणियों को पुरस्कृत किया गया। इस प्रकार शान्तिपाठ के साथ उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन विद्यालय की स्नातिका **संगीता वेदरत्न** ने किया।

अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास सहयोग

इस अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास के निर्माण में सर्वाधिक सहयोग मुम्बई के उद्योगपति **श्री एस.बी. सोमानी** जी के द्वारा प्राप्त हुआ है, आपने आगे छात्रावास के लिए लिफ्ट देने के लिये भी कहा है। दूसरा नम्बर है हैदराबाद के **श्री गुनमपल्ली पुल्ला रेड्डी** हैदराबाद आपने एक तल का निर्माण कराया। इसके अतिरिक्त श्री हनुमान प्रसाद बरनवाल धर्मपत्नी श्रीमती मीरा बरनवाल भदोही, श्री कृष्ण जी काबरा एवं श्रीमती त्रिवेणी देवी काबरा रवीन्द्रपुरी वाराणसी, श्री भागीरथ आर्य मुम्बई ने अपने पूज्य पिताजी श्री चन्दूलाल आर्य प्रधान, आर्य समाज अहमदाबाद तथा माता श्रीमती चन्दो देवी की स्मृति में दो कमरों का निर्माण कराया, श्री अशोक अग्रवाल रुड़की द्वारा पूज्या माता श्रीमती कौशल्या देवी अग्रवाल मेरठ की स्मृति में तथा इनके ही ज्येष्ठ भ्राता श्री शिव कुमार अग्रवाल मानसरोवर मेरठ ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती करुणा अग्रवाल मेरठ की स्मृति में एक-एक कमरे का निर्माण कराया।

आपने छात्रावास में 15 पंखे 1. वाटर कूलर, 1 फ्रिज 1 कूलर, 1 मिक्सी आदि आवश्यक वस्तुओं के लिये भी 1 लाख की राशि पुनः प्रदान की आगे और भी सहयोग देने हेतु आप सदैव तत्पर हैं।

अशोक विहार दिल्ली स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती राज मल्होत्रा जी ने अपनी 50वीं वैवाहिक वर्षगाँठ पर विद्यालय की कन्याओं द्वारा आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ करवाया। और 1 लाख की स्थिरनिधि के संकल्प को 50 हजार रू. देकर पूर्ण किया। तथा श्रीमती विमला चोपड़ा जी दिल्ली ने भी 1 लाख 10 हजार रु. छात्रावास में वस्तुशाला निर्माण हेतु प्रदान किया।

छात्रावास के समीप एक यज्ञशाला की आवश्यकता प्रतीत हो रही है हमें पूर्ण आशा है कि वह भी आप सब के सहयोग से अवश्य निर्मित होगी। परमपिता परमेश्वर आप सभी धार्मिक, समाजसेवी, संस्कृत-संस्कृति प्रेमी दानशील महानुभावों को स्वस्थ, निरामय, दीर्घ, यशस्वी जीवन प्रदान करें तथा परिवार में स्नेह सौहार्द बनाये रखे इन्हीं हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

वेद विज्ञान कार्यशाला

26 फरवरी महाशिवरात्रि के अवसर पर चन्द्रमुखी वेद विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन हुआ। तथा वेद विज्ञान के अध्ययनाध्यापन का शुभारम्भ भी हो गया। 1 मई से 8 मई तक अष्ट दिवसीय वेद विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य **डॉ. वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय** दिल्ली से आमन्त्रित थे। आप यथा नाम तथा गुणाः, **श्रोत्रियंश्छन्दोधीते** पाणिनि के इस सूत्र के अनुसार जो छन्द का अर्थात् वेद का अध्ययन करे वह श्रोत्रिय कहलाता है इस प्रकार अपने श्रोत्रिय उपनाम को चरितार्थ करते हुए वेदों के प्रकाश में तत्पर हैं। जबकि आपका अध्ययन साइंस विषयक रहा मूल में संस्कृत, वेद या व्याकरण का अध्ययन न होते हुए भी आपने अपने स्वाध्याय के बल पर इन ग्रन्थों का विषयों का गहन अध्ययन किया तथा ऋषियों के चिन्तन को समझकर जनमानस के सामने लाने के लिये आपने कोई भी सरकारी सर्विस स्वीकार न कर अपने जीवन का यही ध्येय बना लिया। आपके वेद विज्ञान पर आधारित विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों को सुनने का अवसर अनेक कार्यक्रमों में होता रहा। बहुत अच्छा लगता था कन्यायें भी रुचि लेती थीं। आचार्या नन्दिता शास्त्री जी कई बार चर्चा करती थीं। चिन्तन का यह दृष्टिकोण सभी कन्याओं को प्राप्त होना चाहिये इससे उनका ज्ञान भी बढ़ेगा आदि-2। अन्ततः यह सुयोग बना और इस कार्यशाला के माध्यम से उनके वैदिक मौलिक वैज्ञानिक चिन्तन की जो अजस्र ज्ञान धारा आठ दिन तक चली उस ज्ञान धारा में सभी यथायोग्य आप्यायित, आनन्दित तथा लाभान्वित हुए।

उद्घाटन सत्र के प्रथम व्याख्यान का प्रारम्भ आपने भामा इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों द्वारा पूछे गये प्रश्न कि सम्पूर्ण सृष्टि में कितने तत्त्व हैं के उत्तर से किया, अखिल ब्रह्माण्ड में 33 हजार 3 सौ 42 तत्त्व एक दूसरे में समाहित होते-होते मुख्य रूप से दो ही तत्त्व शेष रहते हैं। आग्नेय तत्त्व एवं सोम तत्त्व आग्नेय तत्त्व प्रकाश युक्त शुष्क होने से हल्के तथा सोम तत्त्व प्रकाशहीन आर्द्र होने से भारी होते हैं। सम्पूर्ण सृष्टि इन दो तत्त्वों के मेल से ही बनी है जैसा कि ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा– **अग्नीषोमात्मकं जगत् यदाग्नेयं तच्छुष्कं यदार्द्रं तत्सोम्यम्**। इस तत्त्व सिद्धान्त को सृष्टि के अनेक पदार्थों के उदाहरणों से आपने स्पष्ट किया। **अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत** इस मन्त्र के अन्तर्गत आये हुए पूर्व ऋषि नूतन ऋषि की व्याख्या करते हुए अनेक मन्त्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रतिपादित किया।

इसी प्रकार प्रतिदिन प्रातः यज्ञोपरान्त, योग के आठ अंगों, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि की वैज्ञानिक व्याख्या ओ३म् तथा सन्ध्या के मन्त्रों का वैज्ञानिक विश्लेषण तथा मध्याह्न 3 से 5 बजे तक सृष्टि के गूढ़ रहस्यों तत्वों का वर्णन करते हुए सृष्टि की समस्त रचनाओं की प्रथम परिणति– विद्युत्, सूत्रात्मा वायु, अवात वायु, त्रयीविद्या, महत्तत्व, अहङ्कार, पञ्चतन्मात्रा, सातलोक, सात परिधि, सुत्या, चित्या, चितेनिधे, दश प्राण, सुपर्णचिति, प्राणचिति भूतचिति, शिरोगुहा, उरोगुहा, उदरगुहा, पादगुहा, आत्मा परमात्मा में भेद (ईश्वर परमेश्वर में भेद), पञ्चमहाभूतों का परस्पर लय एवं विलय प्रक्रिया, परमाणु, अश्व, अश्वत्थ आदि गूढ़ शब्दों का अपनी मौलिक ऊहा से विस्तृत विवेचन अत्यन्त सरल शैली में किया। वैदिक विज्ञान का आधुनिक साइंस के कतिपय फार्मूलों से तुलनात्मक विवेचन करते हुए प्राचीन ऋषियों के वैज्ञानिक चिन्तन की यथार्थता एवं श्रेष्ठता प्रतिष्ठापित की।

इस आठ दिवसीय कार्यशाला में **प्रो. युगलकिशोर मिश्र** (वेद विभागाध्यक्ष सं.सं.वि.वि.), **डॉ. कृष्णकान्त शर्मा** (धर्म विज्ञान संकायाध्यक्ष, बी.एच.यू.), **डॉ. गोपबन्धु मिश्र** (अध्यक्ष- संस्कृत विभाग बी.एच.यू.), **प्रो. कमलेश झा** (धर्मागम विभागाध्यक्ष), **प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी** (तुलनात्मक दर्शन विभाग सं.सं.वि.वि.), **प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी** (बौद्ध दर्शन विभाग बी.एच.यू.), **डॉ. भगवत शुक्ल** (व्याकरण विभाग बी.एच.यू.), **डॉ. भक्तिपुत्र रोहतम्** (धर्मागम विभाग बी.एच.यू.) **प्रो. हृदय रञ्जन शर्मा** (पूर्व वेद विभागाध्यक्ष बी.एच.यू.), **प्रो. कमलेश कुमार जैन** (पूर्व जैन बौद्ध विभागाध्यक्ष सं.सं.वि0वि.), माननीय **इन्द्रेश कुमार** (अखिल भारतीय राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ कार्यकारी सदस्य), **डॉ. सुद्युम्नाचार्य जी** (पूर्व प्रवक्ता- मुरली मनोहर टाउन डिग्री कॉलेज बलिया), **डॉ. ताराशंकर मिश्र** (पूर्व अध्यक्ष आईआईटी विभाग बी.एच.यू.), **डॉ. माधवी तिवारी** (प्रवक्ता हिन्दी विभाग बी.एच.यू.), **डॉ. ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी** (प्राचार्य मुरारका संस्कृत महाविद्यालय पटना) आदि विद्वानों ने विविध सत्रों में अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए वैदिक विज्ञान को अपने-अपने ग्रन्थों के माध्यम से सबके समक्ष स्थापित किया। तथा आचार्य **डॉ. वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी** के व्याख्यान को भी पूर्ण मनोयोग से श्रवण किया तथा सराहना करते हुए सभी ने एक मत हो यह स्वीकार किया कि ऐसे व्याख्यान और बृहद् रूप में आयोजित होने चाहियें जिसमें संस्कृत के विद्वान् भी उपस्थित हों तथा वैज्ञानिक विद्वान् भी तब इन व्याख्यानों की उपयोगिता अधिक सार्थक होगी। इस अष्ट दिवसीय कार्यशाला का योग्यतापूर्ण कुशल संचालन विद्यालय की सुयोग्य स्नातिका **प्रियङ्का शास्त्री** ने किया।

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि यदि विद्यालयीय ब्रह्मचारिणियों की पृष्ठभूमि वेद व्याकरण दर्शन उपनिषदादि ग्रन्थों के अध्ययन से तैयार न होती तो ये कन्यायें इतने गूढ विषय को ग्रहण नहीं

कर सकती थीं यह मेरा ही नहीं अपितु कार्यशाला में उपस्थित सभी विद्वज्जनों का तथा मुख्य वक्ता डॉ. श्रोत्रिय जी का भी अनुभवपूर्ण कथन था। प्राचीन ग्रन्थों के साथ आधुनिक विषयों का भी अध्ययनाध्यापन होने से दोनों विषयों को समझने में सहायता मिलती है एकाङ्गी विषयों का अध्ययन करने वाले इसे कथमपि ग्रहण नहीं कर सकते। अभी पिछले दिनों श्रीमती पुष्पा दीक्षित जी काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय में 25 दिन आर्षपाठविधि से व्याकरण अध्यापन हेतु आमन्त्रित थीं सम्पूर्ण व्याकरण का बहुत कम समय में अध्ययन-अध्यापन की उनकी अपनी अलग शैली है जिससे लोग चमत्कृत थे आर्षपाठविधि का लोहा मानते थे। वे दो घंटे के लिये अपने विद्यालय में आईं कन्याओं से व्याकरण विषयक प्रश्न पूछे उत्तर सुनकर तथा कन्याओं का व्याकरण विषय में अधिकार देखकर बहुत प्रसन्न हुईं। यह इस विद्यालय की ही विशेषता है। कार्यशाला प्रारम्भ होने से 10 दिन पूर्व से ही इसकी पूर्वपीठिका तैयार की गयी थी। आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के निवेदन पर श्री तारांशकर जी ने कन्याओं को आधुनिक विज्ञान के सभी प्रमुख विषयों पर व्याख्यान दिये। उसका लाभ भी कन्याओं ने लिया इस प्रकार यह वेद विज्ञान कार्यशाला पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुई।

वैदिक संस्कार संस्कृत संस्कृति प्रशिक्षण शिविर

15 जून से 26 जून तक आयोजित इस शिविर में मेघालय, असम, मिजोरम, नेपाल, मुम्बई आदि स्थानों से कन्याओं एवं महिलाओं ने भाग लिया जिसमें संस्कृत सम्भाषण, ध्यान, योग प्रशिक्षण, वेद मन्त्र, गीतास्मरण के साथ वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इस शिविर के मध्य में ही तीन दिन के लिये **स्वामी शिवानन्द सरस्वती** जी ने अपना समय दिया जिसमें आपने भारत के सच्चे इतिहास का ज्ञान कराया।

इस शिविर में मुख्य रूप से **श्रीमती पूनम तिवारी** जी (संस्कृत भारती) ने ध्यान योग तथा संस्कृत सम्भाषण का बड़ी कुशलता से प्रशिक्षण दिया। अन्ताराष्ट्रिय छात्रावास का निर्माण जिस उद्देश्य से किया गया उसका शुभारम्भ हो चुका है। नवनिर्मित अन्तर्राष्ट्रिय छात्रावास में दो माह के लिये 30 कन्याओं का आवासीय वैदिक संस्कार संस्कृत प्रशिक्षण शिविर चल रहा है। इसमें मेघालय, मिजोरम, असम, नागालैण्ड, मोगा आदि की कन्यायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। जिसका समापन 3 जुलाई को होगा। यद्यपि यह ग्रीष्मावकाश का समय है पुनरपि कुछ ब्रह्मचारिणियाँ ग्रीष्मावकाश में घर न जाकर इन कन्याओं को प्रशिक्षण दे रही हैं जिसमें– **ब्र. शिल्पा**- मन्त्र एवं गीता, **ब्र. प्राची**– संस्कृत सम्भाषण एवं वैदिक सिद्धान्त। इन ब्रह्मचारिणियों को मेरा बहुत-2 आशीर्वाद ये अपने जीवन में वैदिक वाङ्मय के प्रचार-प्रसार हेतु इसी प्रकार समर्पित रहें।

एक अविस्मरणीय संस्मरण

– श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव
अहमदाबाद

बहुत समय से आकांक्षा थी कि एक बार वाराणसी जाना है, गंगा स्नान के लिये नहीं, वरन् 'पाणिनि कन्या महाविद्यालय' देखने। सन् 1996 में, जब पूज्या आचार्या प्रज्ञा देवी जी ने हमारे यहाँ 'सामवेद-पारायण यज्ञ' कराया था, तब जो वेद की गंगा बही थी और जो कन्याओं द्वारा वेद की ऋचाओं की स्वर लहरी की तरंगे प्रवाहित हुईं थी, तभी से इच्छा बलवती हो गई थी कि एक बार तो जायेंगे ही, इस गंगा का उद्गम देखने।

वह आकांक्षा पूर्ण हुई जब आदरणीया आचार्या नन्दिता शास्त्री जी ने 'अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास' के उद्घाटन समारोह में आने का निमन्त्रण दिया, जो 8 अप्रैल 2014 को रामनवमी के अवसर पर था। हम लोगों ने तुरन्त ही आरक्षण करा लिया और 7 अप्रैल की प्रातः 10 बजे पहुँच गए वाराणसी। एक अनोखी सी अनुभूति हो रही थी कि वाह, सच में पहुँच गए, विश्वास ही नहीं हो रहा था। पूज्या आचार्या जी ने कार भेज दी थी वाराणसी की सड़कों, दुकानों को देखते हुए पाणिनि कन्या महाविद्यालय पहुँच गए।

आदरणीया आचार्या जी ने अपनी निश्छल हँसी के साथ स्वागत किया। यहीं प्रथम बार उपाचार्या प्रीति विमर्शिनी जी से परिचय हुआ। 'पाणिनि प्रभा' में उनके लेख पढ़ते रहते थे कभी फोन पर भी बातचीत हुई थी उनसे मिलकर प्रसन्नता हुई। फूलों से भरे इस परिसर में पीले वस्त्र पहनी कन्यायें तितली सी प्रतीत हो रही थीं।

दोपहर के भोजन एवं विश्राम के बाद सायंकाल कन्याओं के साथ हवन किया। उमा, विद्या, मनीषा, अर्चना हमारे यहाँ पारायण में आई थीं और कुछ दिन साथ में रही थीं, घर के शेष सदस्यों के हाल-चाल पूछने लगीं। सुन्दर भजन और जटा पाठ सुनने को मिले। प्रिय प्रेमलता बहन जी ने पूरा परिसर घुमाया। जिस 'पाणिनि मन्दिनम्' को चित्र में देखते आ रहे थे वह साकार रूप में समक्ष था विशाल सभाकक्ष, नीचे रसायन, भौतिकी एवं जीवविज्ञान की प्रयोगशालायें, कम्प्यूटर कक्ष, सिलाई कक्ष सभी कुछ था। कन्यायें हर क्षेत्र में पारंगत हों इसका पूरा ध्यान रखा गया था।

'महर्षि पाणिनि मन्दिरम्' में चारों ओर बाहर अन्दर अष्टाध्यायी के सूत्र लिखे हुए थे। चार हजार सूत्रों को इतनी सुन्दरता और चतुरता से विभाजन कर लिखवाया जिनका समापन मंच पर आकर हुआ बहुत ही कठिन कार्य रहा होगा। स्वागत द्वार पर सभी देशों के झंडे लगे हुए थे जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को दर्शा रहे थे। दोनों तरफ सुन्दर फव्वारे चल रहे थे। प्राकृतिक और लौकिक दोनों छटाएं देखते ही बनती थीं। हाल में नक्काशी वाले प्रकाश के सुन्दर फानूस भी लगे हुए थे।

कन्याओं के बैंड के साथ माननीय अतिथियों का शुभागमन हुआ। आचार्या नन्दिता शास्त्री जी एवं उपाचार्या प्रीति विमर्शिनी जी के मन्त्रोच्चार के साथ '**अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास**' का उद्घाटन हुआ। विदेशों से आने वाली कन्याओं व महिलाओं के लिए यह एक सराहनीय प्रयास है।

सभागृह में पहुँचने के बाद पूज्या आचार्या जी का स्वागत भाषण हुआ सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न तथा दुशाला डालकर सम्मान किया गया। कन्याओं के रंगारंग कार्यक्रम भी हुए। आचार्या जी एवं उपाचार्या जी का उत्साह देखने योग्य था। चारों तरफ उत्सव का सा वातावरण प्रतीत हो रहा था कन्यायें थी दौड़-दौड़ कर कार्य कर रही थीं। सबका धन्यवाद के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यह सबके अथक प्रयत्न का ही परिश्रम था। ●

विश्व को आर्यों की देन

– स्वामी शिवानन्द सरस्वती

परम पिता परमात्मा ने जब दुनिया को बनाया था तो अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों को पैदा किया, और चारों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया। ईश्वर की प्रेरणा से उन्होंने वेदमन्त्रों का गान किया, उनकी पवित्र वाणी को उस समय के सभी मनुष्यों ने सुना, और सुनकर उन्होंने भी वेद मंत्रों का गान किया इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी वेद विद्या चली। यदि उन चार ऋषियों को परमात्मा प्रेरित न करता तो आज भी सारा विश्व गूंगा ही रहता, क्योंकि मनुष्य का बच्चा तभी बोलता है जबकि वह कुछ सुनता है। यदि कुछ सुनता नहीं तो वह कुछ बोलता भी नहीं, चाहे उसका समस्त नाडी तंत्र ठीक हो। यही कारण है कि जो बच्चा जन्म से ही बहरा होता है तो वह गूंगा भी जरूर होता है। इस पर अनेक बार परीक्षण हुये हैं। यदि आज भी किसी बच्चे को निर्जन जंगल में ले जाकर उसका पालन किया जाये और उसके कान में कोई शब्द न पड़ने दिया जाये तो वह बोल नहीं सकता। बच्चा जैसा सुनता है वैसा ही बोलता है। हमने देखा है कि बहुत से बच्चे अपनी माता को भाभी कहने लगते हैं क्योंकि बच्चे का चाचा उसकी माता को भाभी कहता है।

अब प्रश्न यह है कि जब आज भी बच्चा बिना सुने कुछ बोलता नहीं तो सृष्टि के आदि में जब अमैथुनी सृष्टि हुई थी तब बोलना किसने सिखाया? इसका उत्तर साफ है कि परमात्मा ने सिखाया। सबसे पहले अमैथुनी सृष्टि में मानव की उत्पत्ति तिब्बत में हुई और जब जनसंख्या बढ़ी तो नीचे उतरकर बस गये जहाँ आर्य बसे उसी स्थान का नाम आर्यावर्त्त हुआ। जहाँ मनुष्य उत्पन्न हुआ वहीं पर आविष्कार हुये और फिर धीरे-धीरे संसार में फैल गये। जहाँ भाषा का जन्म हुआ वहीं से लिपि का जन्म होना था, इस प्रकार सर्वप्रथम लिपि भी भारत ने विश्व को दी जिसका नाम था ब्राह्मी लिपि अब उसे देवनागरी कहते हैं। संस्कृत भाषा और ब्राह्मी लिपि संसार को आर्यों ने दी। संस्कृत भाषा संसार की समस्त भाषाओं की जननी है, इसलिये संसार में जितनी भाषाएं हैं संस्कृत उनमें सबसे उत्तम है। किसी भाषा की अच्छाई दो प्रकार से जानी जाती है। प्रथम तो यह है कि इस भाषा का व्याकरण कितना उत्तम है। दूसरी यह है कि इस भाषा में शब्द कितने हैं। संस्कृत जैसा व्याकरण किसी भाषा का नहीं और इसके बराबर शब्द भी किसी दूसरी भाषा में नहीं हैं। दुनियाँ का प्रत्येक व्यक्ति जो पढ़ा लिखा है यह जानता है कि कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्कृत है। जब से वैज्ञानिकों ने यह घोषणा की है कि सबसे उत्तम भाषा संस्कृत है तब से विश्व के अनेक देशों में संस्कृत पढ़ाने पर बल दिया जा रहा है। अरबों रुपये खर्च करके संस्कृत साहित्य पर शोध हो रहे हैं। विश्व का

संस्कृत के प्रति रुझान हो रहा है।

29 अप्रैल 2007 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम जी ग्रीस देश में गये थे। वहाँ उनके स्वागत समारोह में ग्रीस के राष्ट्रपति श्री कार्लोस पम्पडेलिस ने **राष्ट्रपति महाभाग! स्वागतम् यवन देशे**। इस वाक्य को बोलकर अपने स्वागत भाषण का आरम्भ किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा था कि संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। और ग्रीक भाषा संस्कृत से ही निकली है। और उसी वर्ष अमेरिकी संसद का सत्र संस्कृत की वैदिक प्रार्थना से आरम्भ हुआ था। गत 218 वर्षों में अमेरिका के इतिहास में ऐसी घटना पहली बार घटी थी। इस प्रार्थना में **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि** आदि आदि मन्त्रों का गान हुआ और ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः के उद्गारों से प्रार्थना का अन्त हुआ था। और पश्चात् तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार गूंज उठा। यह बात प्रमाणित करती है कि संसार के बुद्धिमान् लोग संस्कृत का आदर करते हैं। बिल ड्यूटरांट नामक एक अंग्रेज सज्जन लिखते हैं कि भारत हमारे वंशगत प्रजाति की मात्र भूमि है। और संस्कृत यूरोप के भाषाओं की जननी है। वह हमारे दर्शन शास्त्र की जन्मदात्री है। अरबों द्वारा हमें प्राप्त हुए गणित की माता, बुद्ध द्वारा प्रसारित, ईसाई मत के आदर्शों की जननी भी संस्कृत ही है। ग्राम पंचायत की परम्परा से प्राप्त, स्वशासन और जनतंत्र की जन्मभूमि भारत ही है। भारतभूमि हर प्रकार से हमारी माता है।

सर विलियम जोंस कहते हैं कि संस्कृत भाषा प्राचीन होने के साथ ही अद्भुत गठनवाली है। ग्रीक और लेटिन इन दोनों से अति सुन्दर है। यह परिष्कृत भाषा है। अब विचार कीजिये कि जो अपने ही देश के लोग और नेता संस्कृत को मृत भाषा कहते हैं वे कितने देश द्रोही हैं।

आर्यों ने विश्व को खगोल विद्या दी। आजकल बच्चों को पढ़ाया जाता है कि कॉपरनिक्स और गेलीलियो नाम के वैज्ञानिकों ने ही बताया था कि पृथ्वी से सूर्य इतनी दूर है, चाँद इतनी दूर है सूर्य इतना बड़ा है। तो क्या इससे पहले आर्य लोग इन बातों को नहीं जानते थे? हमारा उत्तर है कि करोड़ों वर्ष पूर्व आर्यों ने यह सब आविष्कार कर लिए थे और संसार को बता दिया था कि सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ मील दूर है। पृथ्वी से तेरह लाख गुणा बड़ा है और सूर्य में काले धब्बे भी हैं। सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण अमावस्या और पूर्णमासी को ही क्यों होते हैं? पृथ्वी गोल है, रात दिन क्यों होते हैं? कभी दिन बड़ा कभी रात बड़ी क्यों होती है? अमुक ग्रह सूर्य से इतनी दूर है। इतने समय में सूर्य का चक्कर लगाती है। उप ग्रह क्या है। और किस ग्रह के कितने उप ग्रह हैं। अधिक पुरानी बात न करके लगभग पन्द्रह सौ वर्ष पहले की ही बात करें तो महर्षि आर्यभट्ट ने यह सब बता दिया था। इन्होंने बताया था कि शनि ग्रह के सात उपग्रह हैं आज तक कोई वैज्ञानिक इस बात को चुनौती नहीं दे सका न किसी ने आठवां उपग्रह बताया और न किसी ने छः बताए।

आर्यभट्ट ने ही कहा था कि सूर्य में काले धब्बे हैं। अब बच्चों को पढ़ाया जाता है कि सूर्य के काले धब्बों की खोज करने वाला व्यक्ति स्टीफन हॉकिन्स था। गैलीलियो के समय तक यूरोपवासी तो यही मानते थे कि सूर्य धरती का चक्कर लगाता है, जबकि आर्यों ने वैदिक आधार पर अरबों वर्ष पहले बता दिया था कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।

आजकल हर व्यक्ति यह कहता है कि गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार न्यूटन ने किया था यह कोरी बकवास है। महर्षि कणाद ने कई हजार वर्ष पूर्व कह दिया था कि **"संयोगाभावे गुरुत्वात् पतनम्"** (वै.द. प्रथम आह्निक पंचम अध्याय सूत्र सं. 7) अर्थात् जब किसी वस्तु के नीचे की रुकावट हट जाती है तो वह अपने गुरुत्व के कारण सीधी धरती पर आ जाती है।

जब हम आर्ष ग्रन्थों, और प्राचीन इतिहास को देखते हैं तो अपने देश की वर्तमान और भूतकाल की दशा की तुलना करते हैं तो धरती और आकाश का अन्तर पाते हैं यह देश जो किसी समय ऋषि-मुनियों से अलंकृत, वेद आदि शास्त्रों से जटित, विद्या, धन, बल और पौरुष आदि से शोभायमान, सत्यता, धार्मिकता आदि उत्तम गुणों से विभूषित और सभ्यता की खान था इस समय वही देश दिन-प्रतिदिन अवनति को प्राप्त होता चला जा रहा है। जिस देश में रहने वाले व्यक्ति इस संसार को नश्वर मानकर केवल धर्माचरण को ही सर्वोपरि मानते थे, उसी देश के अधिकांश लोग अब यह भी नहीं जानते कि धर्म क्या वस्तु है। जिस देश के लोग विद्या आदि उत्तम गुणों के कारण आर्य कहलाते थे अब उसी देश के लोग काला, काफिर, चोर, लुटेरा, बहशी, नास्तिक आदि नामों से पुकारे जाते हैं। वह विद्या लुप्त हो गई जिस के कारण यह सब देशों का गुरु और शिरोमणि कहलाता था।

मैंने स्वयं देखा है कि बहुत से नवशिक्षित विद्यार्थी पृथ्वी का गोल होना सूर्य के चारों ओर घूमना अक्षांश देशान्तर सूर्य-चन्द्र ग्रहण का होना इत्यादि ज्योतिष की मोटी-मोटी बातों को स्कूल और कॉलेजों में पढ़कर यही समझ लेते हैं कि ये बातें यूरोप वालों ने ही निश्चित की हैं। हमारे पूर्वज कुछ नहीं जानते थे, हमें अंग्रेजों ने सभ्यता सिखाई है। ये विद्यार्थी धर्म और देश से विमुख हो जाते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि प्राचीन समय से इसी देश से सब विद्या संसार में फैली हैं। यहीं के विद्वान् और उपदेष्टा देशान्तरों में जाकर वहाँ के लोगों को शिक्षा देते थे। प्राचीन इतिहास से यह सिद्ध है कि यहीं से मिश्र, मिश्र से अरब और यूनान और यूनान से यूरोप के सब देशों में विद्या और सभ्यता का प्रचार हुआ। यदि पाइथागोरस, सोक्रेटीज, एरिस्टोटल, प्लेटो आदि यूनान के तत्वज्ञानियों के विचारों को महर्षि कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनि, व्यास और पतंजलि के विचारों से तुलना करें तो उनमें समानता पाये जाने से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि भारतवर्ष से ही धीरे-धीरे सब विद्यायें समस्त संसार में फैलीं। इस बात को कर्नल अल्काट ने भी स्वीकार किया है और

अपनी पुस्तक में भी लिखा है (देखिये भारत त्रिकाल दशा) हमारे देश के विद्यार्थी जिन यूरोपवासियों को बुद्धि के भण्डार, पदार्थ विज्ञान और शिल्प-कला आदि के अगाध समुद्र माने बैठे हैं उन्होंने पचास-पचास लाख की दूरबीनों से जिन ग्रहों की गति निश्चित की थी उन्हीं ग्रहों की गति हमारे पूर्वज एक बांस की नली द्वारा यथार्थ निश्चित कर गये हैं उदाहरण के लिये देखो (यन्त्र अध्याय सिद्धांत शिरोमणि) इस्लाम जगत् के लोग कुरान के आधार पर यह मानते हैं, कि सूर्य एक तालाब में डूब जाता है और फिर निकल आता है (कुरान-सूरा कहाफ-आयत संख्या 86) इस बात को आज पांचवी कक्षा का बच्चा भी स्वीकार नहीं कर सकता। क्योंकि सूर्य की स्थिति को सब जानते हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है–

स वा एष न कदाचनास्तमेति, नोदेति तं यदस्तमेतीति मन्यन्तेऽह्न एव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते॥ रात्रीमेवावस्तान् कुरुतेऽहः परस्तात्। अथ यद् एनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते। रात्रेरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यतेऽहरेवावस्तात् कुरुते रात्री परस्तात्। स वा एष न कदाचन निम्रोचति न ह वै कदाचन निम्रोचति।

(ऐतरेय ब्राह्मण- 14/6/43)

अर्थ– यह सूर्य न कभी अस्त होता है न उदय होता है। जब उसका अस्त होना मानते हैं तब दिन का अंत करके अपने को दूसरी ओर दिखलाता है। इधर रात्री करता है और दूसरी और दिन करता है और जब प्रातःकाल में उसका उदय होना मानते हैं तो जब वह रात का अंत करके अपने को विपरीत दिखलाता है इधर दिन करता है तथा दूसरी ओर रात पर वह कभी छिपता या निकलता नहीं है।

(क्रमशः)

सम्पादकीयम्

(पृष्ठ 7 का शेष)

वेद में राजा को इन्द्र कहा है और इन्द्र को सम्राट्। मेरे देश की यही परम्परा रही है महाभारत काल तक इस देश के राजा जो इन्द्र के समान दुष्टों के विनाशक व सज्जनों के रक्षक होते थे वे न केवल भारत देश अपितु सम्पूर्ण भूमण्डल के मानवता के रक्षक दिशानिर्देशक हृदय सम्राट् ही नहीं चक्रवर्ती सम्राट् हुआ करते थे। मुझे गौरव है काशी मेरा शिक्षाक्षेत्र रहा है जो काशी वैदुष्य की कसौटी हुआ करती थी विदुष्मती कही जाती थी आज मोदी जी ने भी जब काशी में आकर ये शब्द कहे कि– **जब काशी राष्ट्रगुरु बनेगा तब भारत विश्वगुरु बनेगा** सुनकर अभिमान से सीना चौड़ा हो गया। वस्तुतः यह सम्पूर्ण काशीवासियों का दायित्व है कि वे वह कार्य करें जो भारत को राष्ट्र गुरु ही नहीं विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर सके।

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र

गतांक से आगे –

– आचार्य हरिहर पाण्डेय

कल्प महायुग और युग

हमारे सबसे लम्बे कालमान कल्प और युग हैं। वेदों में इनके नाम तो हैं पर मान नहीं। आजकल 432000 वर्षों का कलियुग, उसका दो गुना द्वापर, तीन गुना त्रेता, चार गुना कृतयुग (सतयुग) और दस गुना महायुग माना जाता है। चारों युगों के योग को महायुग कहते हैं। ब्रह्मा का एक दिन एक सहस्र महायुगों का होता है। उसे ही कल्प कहते हैं और एक कल्प में 14 मन्वन्तर होते हैं अर्थात् एक मनु का काल लगभग 71 महायुग होता है और ब्रह्मा की आयु उनके वर्षों से सौ वर्ष की होती है। कल्प शब्द का अर्थ है समर्थ या समूथत। आजकल कुछ वर्षों के भले-बुरे नियमित समूहों को युग कहा जाता है पर वेदों में यह अर्थ नहीं है। ऋग्वेद में युग न तो निश्चित वर्षों वाला कालमान है न भले-बुरे वर्षों का समूह। उसमें युग शब्द के कई अर्थ हैं। उसके कुछ मन्त्र ये हैं–

अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे 3/26/3 में युगे-युगे का अर्थ है– प्रत्येक वर्ष में। **मनुष्या युगानि** 1/92/11 और **मानुषेमा युगानि** 1/103/4 में उसका एक पीढ़ी या एक वर्ष अर्थ है। **दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे** 1/158/6 में युग का अर्थ है दशम वर्ष अथवा चार-पाँच वर्ष। **त्वामग्ने युगे-युगे दधिरे देवासः** 6/15/8 में युग एक दीर्घकाल के लिए प्रयुक्त है। **युगे-युगे विदथ्यं** 6/8/5 **देवानां पूर्व्ये युगे** 10/72/2 और **पितरो युगे-युगे क्षेमकामासः** 10/94/12 में भी वही अर्थ है। **यथा युगं वरत्रया** 10/60/8 का अर्थ है– जैसे बैल के कंधे पर रखे जुए को रस्सी से बाँधते हैं। **युनक्त सीरा वि युगा** 10/101/3 और **सीरा युंजन्ति कवयो युगा वि तन्वते** 10/101/4 का अर्थ है, हल जोतते हैं और जुओं को फैलाते हैं। यहाँ बैलों की जुआठ ही युग है। ये मन्त्र ऋग्वेद के हैं। अथर्ववेद 8/2/21 मन्त्र है– **शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः**। यहाँ दो, तीन, चार युगों का सौ और दस सहस्र वर्षों से सम्बन्ध है। ऋग्वेद और वाजसनेयि संहिता के दो मन्त्रों में नाहुषयुग और त्रियुग शब्द है।

भारतरत्न श्रीपाण्डुरंग वामन काणे ने अपने धर्मशास्त्र के इतिहास में लिखा है कि– "अपने युग को हर ग्रंथकार ने कष्टमय और पापमय कहा है। तैत्तिरीय ब्राह्मण 1/5/11 से सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में कृत शब्द चार गुने के अर्थ में लिया जाता था। जीते हुए पासों की संख्या चार से कट जाने पर कृत और 3,2,1 शेषों से त्रेता, द्वापर, कलि माना जाता था। छान्दोग्योपनिषद् (4/1/4) के भाष्य में शंकराचार्य ने भी यही कहा है। शतपथ ब्राह्मण 5/4/4/6 में कृत जिताने वाला और कलि हराने वाला है। वेदों से

लेकर उपनिषद् काल तक कृतादि शब्द जुए में प्रयुक्त होते थे। कृत शुभ था और त्रेता, द्वापर, कलि क्रमशः अधिकाधिक अशुभ थे। महाभारत (विराट् पर्व 50/24) में भी कृत और द्वापर शब्दों के ये ही अर्थ हैं। युग सम्बन्धी आज के सिद्धान्त का उदय ईसा पूर्व तीसरी या चौथी शताब्दी में हुआ और वह ईसा की चौथी शताब्दी तक पूर्ण प्रचलित हो गया।"

राजा ही युग है

ऐतरेय ब्राह्मण (33/3) के अनुसार मनुष्य के चार प्रकार के कर्म या चार मानसिक स्थितियाँ ही चार युग हैं। सोया हुआ अर्थात् आलसी और अकर्मण्य मनुष्य कलि है, उठने के लिए प्रयत्नशील द्वापर है, उठा हुआ त्रेता है और कर्म में तत्पर कृतयुग है।

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठन् त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्॥

यह श्लोक थोड़े शब्द भेद से मनुस्मृति में भी आया है। सत्य यह है कि कई लाख वर्ष लम्बा कालमान अति पुण्यवान् या अति पापमय नहीं हो सकता। भले बुरे मानव हर युग में रहते हैं। राम-रावण और कृष्ण-कंस एक ही समय में थे। अकबर-औरंगजेब से लड़ कर मरने वाले और उनसे अपनी बहन-बेटियाँ ब्याहने वाले हिन्दू एक ही युग में विद्यमान थे। एक ही दिन में एक योगी समाधि में बैठा रहता है और ठीक उसी समय एक भोगी वेश्यारत रहता है अतः युग भला-बुरा नहीं होता। उसे भला-बुरा बनाना राजा-प्रजा के वश में है। युगों के जो नाम पहले पासों विषयक थे, वे बाद में कर्मों से और राजा-प्रजा की वृत्तियों से जोड़ दिये गये और वे ही कुछ दिनों बाद लम्बे-लम्बे युग हो गये। महाभारत (शान्तिपर्व अध्याय 69) के अनुसार राजा द्वारा राज्य की सर्वोत्तम प्रबन्ध वाली स्थिति कृतयुग, तीन चतुर्थांशों वाली त्रेता, दो अंशों वाली द्वापर और तीन पदों से दूषित तथा एक पाद से शुद्ध कलियुग है परन्तु घोर कलि आने पर धर्म और नीति का चौथा पाद भी टूट जाता है अर्थात् राजा ही चारों युगों का निर्माता है।

दण्डनीत्यां यदा राजा सम्यक् कार्त्स्न्येन वर्तते।
तदा कृतयुगं नाम कालसृष्टं प्रवर्तते॥
दण्डनीत्यां यदा राजा त्रीनंशाननुवर्तते।
चतुर्थमंशमुत्सृज्य तदा त्रेता प्रवर्तते॥
अर्धं त्यक्त्वा यदा राजा नीत्यर्धमनुवर्तते।
ततस्तु द्वापरं नाम कालस्तत्र प्रवर्तते॥
दण्डनीतिं परित्यज्य यदा कार्त्स्न्येन भूमिपः।
प्रजाः क्लिश्नात्ययोगेन प्रवर्तेत तदा कलिः॥
राजा कृतयुगस्रष्टा त्रेताया द्वापरस्य च।
युगस्य च चतुर्थस्य राजा भवति कारणम्॥

मनुस्मृति 9/301 के अनुसार युगों के नाम वस्तुतः राजा के चरित्र हैं। जिस स्थिति में धर्म के सत्य, दया, तप और दान नामक चारों पाद सुरक्षित रहते हैं वह कृतयुग है तथा एक-एक पाद हीन होने पर त्रेतादि युग बन जाते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण वाला श्लोक यहाँ भी है।

कृतं त्रेतायुगं चैव द्वापरं कलिरेव च।
राज्ञो वृत्तानि सर्वाणि राजा हि युगमुच्यते॥
कृते प्रवर्तते धर्मश्चतुष्पात्तज्जनैर्धृतः।
सत्यं दया तपो दानमिति पादा विभोर्नृप॥
कलिः प्रसुप्तो भवति स जाग्रद् द्वापरं युगम्।

कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेता विचरंश्च कृतं युगम्॥

भागवत (12/3) का कथन है कि मनुष्य के मन में चारों युग सदा आते रहते हैं। इन्द्रियों में सत्त्व की वृद्धि हो जाय और तप तथा ज्ञानार्जन में रुचि बढ़ जाय तो समझ लो कि कृत युग आ गया है। मनुष्य कामनाओं में आसक्त होकर धर्म-अधर्म भूल जाय तो जान लो कि वह त्रेता हो गया है। लोभी, असन्तोषी अहंकारी, द्वेषी और तृष्णाकुल मनुष्य द्वापर में स्थित है तथा जो माया, असत्य, आलस्य, निद्रा, हिंसा, विषाद, शोक, मोह, भय एवं दैन्य आदि से ग्रस्त है वह सर्वदा तामस कलि में बैठा है।

सत्त्वं रजस्तम इति दृश्यन्ते पुरुषे गुणाः।
कालसंचोदितास्ते वै परिवर्तन्त आत्मनि॥
प्रभवन्ति यदा सत्त्वे मनोबुद्धीन्द्रियाणि च।
तदा कृतयुगं विद्यात् ज्ञाने तपसि यद्रुचिः॥
यदा धर्मार्थकामेषु भक्तिर्भवति देहिनाम्।
तदा त्रेता रजोवृत्तिरिति जानीहि बुद्धिमन्॥
यदा लोभस्त्वसन्तोषो मानो दंभोऽथ मत्सरः।
कर्मणां चापि काम्यानां द्वापरं तद् रजस्तमः॥
यदा मायाऽनृतं तन्द्रा निद्रा हिंसा विषादनम्।
शोको मोहो भयं दैन्यं स कलिस्तामसः स्मृतः॥

गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है कि युगधर्म सबके हृदयों में सर्वदा आते रहते हैं। हृदय में शुद्ध सत्त्व, साम्यवाद एवं ज्ञानविज्ञान का उदय हो जाय और मन सदा हर्षित रहे तो समझ लो कि हम कृतयुग में हैं। सत्त्व के साथ थोड़ा रज भी आ जाय, चित्त प्रसन्न हो और कर्मों में आसक्ति हो जाय तो समझ लो कि त्रेता आ गया है। सत्त्व कम हो जाय, रजोगुण बहुत हो जाय, तामस भी आ विराजे और हर्ष के साथ शोक एवं भय भी आ जायँ तो समझ लो कि हम द्वापर में हैं। सत्त्व का अभाव, रज और तम की अधिकता तथा विग्रह की वृद्धि ही कलि का आगमन है। जिनकी परमात्मा में अतिशय प्रीति है उन पर युगों का प्रभाव नहीं पड़ता। वे सदा सत्त्वयुग में रहते हैं।

प्राचीन काल में मनुष्य की चार प्रकार की वृत्तियाँ चार युग मानी जाती थीं पर बाद में ये युग 1200, 2400, 3600 और 4800 वर्षों के कालमान हो गये। मनुस्मृति, भागवत और हरिवंशपुराण आदि में ऐसे युगों का वर्णन है।

चत्वार्याहुः सहस्राणां वर्षाणान्तु कृतं युगम्।
तस्य तावच्छती संध्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः॥
चत्वारि त्रीणि द्वे चैकें कृतादिषु यथाक्रमम्।
संख्यातानि सहस्राणि द्विगुणानि शतानि च॥
त्रीणि वर्षसहस्राणि त्रेता तु परिणामतः।
तथा वर्षसहस्रे द्वे द्वापरं परिकीर्तितम्॥
कलिर्वर्षसहस्रं च संख्यातोऽत्र मनीषिभिः॥

इसका अर्थ यह है कि कृतयुग चार सहस्र वर्षों का होता है और उसके सन्ध्या संध्यांश चार-चार सौ वर्षों के होते हैं। इस प्रकार पूरा कृत 4800 वर्षों का होता है और त्रेता 3600, द्वापर 2400 तथा कलि 1200 वर्षों का होता है परन्तु बाद में ये मानववर्ष देववर्ष मान लिये गये तो वर्षों की संख्या 360 गुना बढ़ गयी। इतना ही नहीं, वर्ष संख्या के साथ युगों के गुण भी बदल गये। ●

(क्रमशः)

स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

गतांक से आगे–

— आशा रानी व्होरा

क्रान्ति की वीरांगना

रानी लक्ष्मीबाई

"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।" इस सुप्रसिद्ध कविता से भारत का बच्चा-बच्चा परिचित है। रानी लक्ष्मीबाई पर अब तक सैकड़ों लेख, कविताएं, नाटक आदि लिखे जा चुके हैं। अनेक भाषाओं में पुस्तकें भी। उनकी वीरता की कहानी पर फिल्म बनायी जा चुकी है। हर वर्ष 17 जून का दिन उनके बलिदान-दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत की ही नहीं, विश्व की हर युवती उनसे प्रेरणा पाती है।

हमारे इतिहास में अनेक स्त्रियाँ अपने सतीत्व, सेवापथ या अध्यात्म-ज्ञान के बल पर अमर हुईं। सतीत्व-रक्षा के लिए वीरांगनाओं ने जौहर भी किये, पर सैनिक-वेश में स्वयं युद्ध ही नहीं, युद्ध का सफल नेतृत्व करने वाली रानी लक्ष्मीबाई की यश-गाथा भारतीय इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ है।

लक्ष्मीबाई का जन्म 16 नवम्बर 1835 को बनारस में हुआ। 1857 के युद्ध के पूर्व पूना में पेशवा का बोलबाला था। पर अंग्रेजों ने बाजीराव पेशवा को गद्दी से उतारकर मनमानी ढंग से उनके छोटे भाई चिमाजी को गद्दी पर बिठाना चाहा, तो स्वाभिमानी चिमाजी सपरिवार बनारस चले गये थे।

लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपन्त, पेशवा की फौज के एक उच्चाधिकारी के पुत्र थे, जो चिमाजी के साथ ही बनारस आ गये थे। लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनुबाई था। चार वर्ष की उम्र में उनकी माँ भागीरथीबाई का देहांत हो गया था, तो मोरोपन्त कन्या को लेकर बाजीराव के पास बिठूर आ गये। वहीं मनु का बचपन पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब के साथ खेल-कूद में बीता। वहीं नाना के साथ खेल-खेल में उसने हिन्दी, मराठी, संस्कृत भाषाएं सीखने के साथ शिकार, तैराकी, शस्त्र-विद्या, मल्लविद्या और घुड़सवारी भी सीख ली। एक दिन मनु ने हाथी की सवारी के लिए जिद की। पिता मोरोपन्त ने समझाया, "बेटी तेरे भाग्य में हाथी की सवारी नहीं है।" चंचल मनु तुरन्त तुनक उठी, "मेरे भाग्य में एक नहीं, सौ हाथी हैं। मैं महारानी बनूंगी।" पिता हैरान रह गये। तभी एक ज्योतिषी ने भी उसकी जन्मकुण्डली और तेजस्वी आँखें देखकर कहा, "मनु निश्चित ही महारानी बनेगी।" उस समय किसी को इन बातों पर विश्वास न आया। पर 1848 में जब झांसी के महाराज गंगाधर राव ने पुत्र के अभाव में उन्हें अपनी द्वितीय रानी बनाया, तो भविष्यवाणी सच हो गई। लक्ष्मीबाई, मनु का विवाह के बाद का रखा हुआ नाम है।

लक्ष्मीबाई के एक पुत्र को जन्म देने पर झांसी

के राज्य भर में खुशियाँ मनाई गईं। पर बच्चा तीन महीने बाद ही चल बसा और गंगाधर राव पुत्र शोक से रोग शैय्या पर पड़ गए। बीमारी असाध्य देखकर महाराजा ने आनन्द राव नाम के एक पांच वर्षीय बालक को गोद ले लिया। और उसका नया नामकरण किया दामोदर राव, इसके कुछ दिन बाद ही महाराज चल बसे। लक्ष्मीबाई अट्ठारह वर्ष की छोटी-सी उम्र में ही विधवा हो गई। उस समय भारत में अंग्रेजी राज्य के विस्तार के लिए लार्ड डलहौजी की कूटनीति चल रही थी। उन्होंने मेजर एलिस को भेजकर झांसी के राजकीय खजाने को सील बंद कर दिया। गंगाधर राव के दत्तक पुत्र को अवैध घोषित कर दिया और रानी को 5000 रुपये वार्षिक पेंशन देकर राजमहल खाली करने का आदेश दे दिया।

गंगाधर राव की अंतिम वसीयत के अनुसार दामोदर राव के वयस्क होने तक लक्ष्मीबाई राज्य की उत्तराधिकारिणी थीं। रानी ने अपने शासनाधिकार को बनाए रखने का काफी प्रयत्न किया, पर व्यर्थ। पंजाब के सिक्ख, बंगाल के नवाब और महाराष्ट्र के पेशवा सभी तो घुटने टेक चुके थे। कोई न कोई बहाना बनाकर या वारिस न होने पर राज्य कम्पनी की हुकूमत में मिला लिये जाते थे, झांसी राज्य भी इसी तरह 1854 में अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। रानी विवश हो अपने पुत्र के साथ एक किराये के मकान में रहने लगीं। पर वह चुप बैठने वाली नारी नहीं थीं। अपने अधिकार के लिए पहले ब्रिटिश अधिकारियों से पत्र-व्यवहार चला। फिर रानी द्वारा अपने दावे को सिद्ध करने के लिए एक बंगाली तथा एक अंग्रेज वकील को ईस्ट इंडिया कंपनी के पास लंदन भी भेजा गया। फिर भी कुछ फल न निकला, तो रानी तिलमिला उठीं। उन्होंने अपने विश्वस्त साथियों को बुलाकर घोषणा की, "मैं चुप नहीं बैठूंगी, भले ही प्राण देने पड़ें।" रानी के प्रति न्याय के इस पक्ष का सभी ने समर्थन किया। और बस संघर्ष की शुरुआत हो गई।

अंग्रेजों ने सुना तो रानी की पेंशन बंद कर दी और राज्य की सेना से उनके समर्थक सभी सैनिक व सेनाधिकारी चुनकर बाहर निकाल दिए। रानी ने अपने गहने बेचकर इन सभी सैनिकों को इकट्ठा किया और तैयारी शुरु कर दी। अंग्रेजों की ज्यादतियों के खिलाफ उन दिनों हर जगह भारतीय सैनिकों में भीतर ही भीतर असंतोष पल रहा था। लगता था, किसी भी समय यह विस्फोट होगा। मार्च-अप्रैल-मई 1857 को बैरकपुर व मेरठ छावनी में पहला विस्फोट हुआ और देखते-देखते फैलने लगा। तात्या टोपे, नाना साहब, अंतिम मुगल बादशाह बाहदुरशाह जफर आदि कई देशभक्त इस सैनिक विद्रोह के सूत्रधार बन गए थे। मौका देख 4 जून 1857 को विद्रोहियों ने झांसी के किले पर भी आक्रमण कर दिया। कुछ अंग्रेज मारे गए। कुछ भाग गए। प्रजा ने लक्ष्मीबाई को झांसी की रानी घोषित कर गद्दी पर बैठा दिया।

रानी ने शस्त्रविद्या तो खूब सीखी ही थी। शासनसूत्र संभालते ही पहला काम उन्होंने किया,

झांसी के लिए सैनिकों और शस्त्रास्त्र की सुदृढ़ व्यवस्था। इसके बाद उन्होंने प्रजा-हित के कार्यों की शुरुआत की ही थी कि विपत्ति सिर पर आ खड़ी हुई। गंगाधर राव के एक सम्बन्धी ने अंग्रेजों के हटते ही अपना दावा लेकर झांसी पर आक्रमण कर दिया। उसे परास्त करने के बाद ओरछा का दीवान नत्थे खां बीस हजार सैनिकों के साथ चढ़ आया। रानी के पास इतनी तैयारी और रण-कौशल था कि नत्थे खां को भी मुंह की खानी पड़ी। पराजित नत्थे खां ने अंग्रेज शासकों की शरण ली और उन्हें भड़काया कि सारे सैनिक विद्रोह का संचालन झांसी से हो रहा है। अंग्रेज अधिकारियों के मन में भी पूर्व पराजय का मलाल था। उन्होंने सोचा मध्य भारत में सैनिक विद्रोह दबाने के लिए झांसी की रानी की शक्ति का दमन करना होगा। जनरल ह्यूरोज अपनी अंग्रेज सेना के साथ झांसी पर अधिकार करने के लिए रवाना कर दिया गया। रानी को समाचार मिला, तो उन्होंने भी तैयारी शुरू करदी, युद्ध ठन गया।

रानी लक्ष्मीबाई इतनी रणकुशल थीं कि उन्होंने आस-पास का सारा इलाका वीरान कर दिया, ताकि अंग्रेज सेना को अन्न, पानी न मिल सके। पर अपने ही पड़ोसियों ने उनका साथ नहीं दिया। ग्वालियर और टीकमगढ़ के महाराजाओं ने अंग्रेजी सेना के लिए सामान मुहैया कर दिया, जिससे वह आगे बढ़ आई। झांसी के किले की तोपें आग उगलने लगीं। प्रवेश द्वार के प्रबंधक खुदाबख्श और तोपखाने के अधिकारी गुलाम गौस खां ने जान की बाजी लगा दी। बारह दिन तक भीषण संग्राम चला। रानी दिन-रात एक कर युद्ध का संचालन करती रही। अंग्रेज सेना संख्या में ज्यादा थी। रानी की किलेबंदी अच्छी थी। किसी भी पक्ष की हार-जीत होते न देख अंग्रेजी सेना झांसी नगर में घुसकर लूट-पाट और आगजनी करने लगी। प्रजा पर यह संकट देख रानी सोच में पड़ गई। उन्होंने तात्या टोपे को पत्र भेजकर सहायता के लिए बुला भेजा। पर तात्या टोपे की सेना को अंग्रेजों ने बीच में ही रोक लिया। इधर कई मोर्चे टूटने लगे। हर टूटते मोर्चे पर पहुँच रानी स्वयं उसे संभालती थीं, तभी ह्यूरोज ने किले की घेराबंदी कर भयानक गोलाबारी शुरू कर दी। किले की तोपें उसका मुंह तोड़ उत्तर दे रही थीं कि इसी बीच अंग्रेजों की 'फूट-डालो' नीति काम कर गई। दूलाजी नामक एक विश्वासघाती से उन्हें बारूदखाने का पता चल गया। फिर क्या था, बारूदखाने पर तोप के गोले बरसे और सैकड़ों वीर सिपाही हवा में उड़ गए। खुदाबख्श एवं गुलाम गौस खां मारे गए। नगर से भीषण मारकाट की खबरें आ ही रही थी। रानी के लिए अब किले से बाहर निकलने के सिवाय कोई चारा न रहा। उन्होंने घोड़े की पीठ पर पुत्र को बांधा, लगाम मुंह से थामी और दोनों हाथों से तलवार चलाती भीड़ को चीरती हुई बाहर निकल गई।

हार सामने देख रानी ने अपने सिपाहियों से कहा, "आप लोग अपनी रक्षा के लिए जा सकते

हैं, मैं अपनी झांसी जीते-जी नहीं छोड़ूँगी।'' पर स्वतंत्रता युद्ध को जारी रखने के लिए रानी का जीवन बचाना आवश्यक था। इसलिए सरदारों ने उन्हें कालपी की ओर रवाना कर दिया। लेफ्टिनेंट वाकर ने अपनी टुकड़ी के साथ रानी को उनके बारह साथियों समेत राह में आ घेरा। लेकिन वीर रानी ने तलवार के एक ही वार से वाकर को मार गिराया। उसके सैनिक भाग खड़े हुए। कालपी के किले में नाना के भाई राव साहब थे। कालपी का किला सुदृढ़ था। सेना और युद्ध-सामग्री का भी वहाँ अभाव न था। पर वहाँ रानी जैसा कोई संगठनकर्ता नहीं था। राव साहब ने उन्हें सहायता का वचन दिया। पेशवाओं के नेतृत्व में आस-पास के राज संगठित होने लगे। ह्यूरोज सेना लेकर कालपी की ओर बढ़ रहा था, उसे किले तक पहुँचने के पहले ही रोक लिया गया। कोंच के पास युद्ध हो गया। इस समय यदि युद्ध-संचालन व्यवस्था रानी को सौंपी जाती, तो जीत निश्चित थी, पर राव साहब ने नारी की कमान में युद्ध लड़ने में अपना अपमान समझा। यदि रानी व्यवस्थित मोर्चाबंदी करतीं, तो कालपी में ही गदर का निर्णय हो जाता। पर पुरुष संस्कारों का क्या किया जाए। रानी को केवल 250 सैनिकों के साथ एक ओर की रक्षा-पंक्ति दे दी गयी। राव साहब ने पहले तो अंग्रेज सेना को उखाड़ा फिर उनके ऊँट-तोपखाने के आगे स्वयं उखड़ गए। रानी को किले का आश्रय लेना पड़ा। किला घिर जाने से वह वहाँ से भी उसी तरह दोनों हाथों से तलवार चलाती निकल पड़ीं, जैसे झांसी के किले से निकली थीं।

इसके बाद लक्ष्मीबाई और राव साहब ने ग्वालियर से 46 मील दूर गोपालपुर में डेरा डाला। पर यहाँ मोर्चा जमाना कठिन था। उन्होंने ग्वालियर के महाराजा सिंधिया और बांदा के नवाब को अपने साथ मिलाने का प्रयत्न किया, पर वे नहीं माने। ग्वालियर का किला अधिकार में न होने से अंग्रेजों से लड़ना कठिन था। इसलिए रानी सिंधिया के तोपखाने पर टूट पड़ी। दूसरी ओर से तात्या टोपे ने भी आक्रमण कर दिया। सिंधिया की सेना हार गई। महाराजा सिंधिया भाग खड़ा हुआ और ग्वालियर के अधिकांश स्वतन्त्रता प्रेमी सैनिक इन स्वतन्त्रता संग्रामियों के साथ हो गये। नाना साहब पेशवा बने। राव साहब उनके प्रतिनिधि। जीत की खुशी में राव साहब की सेना राग-रंग में डूब गई। लक्ष्मीबाई सजग थीं। बार-बार आने वाले खतरों के प्रति चेतावनी दे रही थीं, पर उनकी बात वहाँ भी अनसुनी कर दी गई। उन्हें दुख था कि तात्या टोपे जैसा वीर भी इस नाच-रंग को नहीं रोक रहा था। संकट देख रानी ने स्वयं ही प्रबंध किया। ग्वालियर के सभी मार्गों पर मोर्चाबंदी की। मर्दाने वेश में अपनी दो सहेलियों- काशी, मंदरा और कुछ अन्य अगरक्षकों के साथ पूर्वी प्रवेशद्वार पर स्वयं तैनात हो गईं।

यहाँ ह्यूरोज की सेना के साथ उनका अंतिम घमासान युद्ध हुआ। रानी की व्यूह-रचना सुदृढ़ थी,

अंग्रेजी सेना में साधनों और अनुशासन की शक्ति थी। पीछे से वही ऊँट-तोपखाना पहुँचने पर, भयंकर जमाव के बावजूद रानी की सेना के पांव उखड़ने लगे। पर ज्यों ही घूमकर रानी ललकारतीं, सेना में नयी स्फूर्ति दौड़ जाती। धरती लहू से लाल हो गई। दो दिन के भयंकर युद्ध के बाद भी जब रानी की व्यूह-रचना नहीं टूटी, तो कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने रानी को जीत का मौका देकर राव साहब की ओर हमला कर दिया। राव साहब इस बार भी संभाल नहीं पाए। उनके मोर्चे टूटते देख रानी आगे बढ़ीं और अंग्रेजी सेना से घिर गईं। उनके अधिकांश सैनिक मारे गए। घोड़ा भी क्षत-विक्षत हो गिर पड़ा। फिर भी रानी घुटने टेक देती, तो इतिहास में उनका नाम अमर कैसे होता। फुर्ती से उन्होंने घोड़ा बदला, लगाम मुंह में थामी और दोनों हाथों से उसी तरह तलवार चलाती निकल भागी। साथ में उनके अंगरक्षक और दस-बारह विश्वस्त साथी थे। कर्नल स्मिथ की एक टुकड़ी उनका पीछा कर रही थी। दोनों ओर से गोलियाँ दागी जा रही थीं। एक गोली रानी के पांव में आकर लगी। फिर भी वह वीरांगना हिम्मत से तलवार थामे घोड़ा दौड़ाती गई बालक दामोदर राव भी घोड़े पर बैठी रानी की पीठ पर बंधा था। जैसे ही उन्हें अपनी एक अंगरक्षक सखी मंदरा की चीख सुनायी दी, रानी ने घूमकर उस अंग्रेज का सिर अपनी तलवार के एक ही वार से उड़ा दिया। रानी ने फिर घोड़े को सरपट दौड़ाया। पर सामने एक नाला आ गया। रानी का सधा हुआ घोड़ा पिछले दिन युद्ध में घायल हो चुका था। साथ आये साथियों में से भी कुल पांच-छः लोग ही बचे थे। नया घोड़ा जैसे ही नाला देखकर अड़ा पीछा करते शत्रु पास आ गये बचे लोग मोर्चा बना कर थोड़ी देर लड़े, पर पीछे से एक अंग्रेज ने रानी के सिर पर तलवार से एक वार किया और दूसरा उनके सीने पर। रानी बुरी तरह जख्मी हो गयी। आँख कटकर बाहर निकल आयीं। फिर भी उन्होंने घूमकर वार करने वाले उस अंग्रेज घुड़सवार को खत्म कर दिया। इसी अंतिम वार से वह घोड़े से गिर पड़ी।

जो रानी लड़ते-लड़ते शिथिल होकर नहीं गिरी थीं, अपने-प्यारे घोड़े के साथ छोड़ जाने पर भी नहीं गिरी थीं, उन्हें इस नये घोड़े के कारण मौत के आगे घुटने टेकने पड़े। पर रानी का आदेश था, "मरने पर भी उनका शव शत्रुओं के हाथ न लगे।" इसलिए बचे लोग शत्रुओं को उलझाये रहे और रानी के विश्वासी अंगरक्षकों रामचन्द्र राव और काशीबाई ने रानी का शव पास की एक कुटिया में रख उनका दाहसंस्कार कर दिया। पीछा करने वाले शत्रुओं के वहाँ पहुँचने तक सब कुछ समाप्त हो चुका था।

रानी की इच्छा पूरी हुई। शत्रु उनके शव को भी हाथ नहीं लगा सके। इसीलिए तो झांसी की लक्ष्मीबाई की बहादुरी और शहादत की यह कहानी तब से आज तक हमें प्रेरणा देती आ रही है, आगे भी युगों तक देती रहेगी। ●

(क्रमशः)

ब्राह्मण! सावधान

गताङ्क से आगे–

– डा. सम्पूर्णानन्द

उपासना पद्धति कैसी हो?

उपासना पद्धति तपोमूलक होनी चाहिये, उसमें पदे पदे इस बात का संस्मरण होना चाहिये कि दैवी शक्तियाँ उत्कोच या चाटुकारिता से नहीं रिझायी जा सकतीं। न उन्हें मीठी-मीठी स्तुतियों के सुनने की अभिलाषा है, न माला, फूल मिठाई-पकवान की भूख। न गोशाला में चन्दा देना उनको बहका सकता है, न ब्राह्मण को दक्षिणा देना उनकी आँख में धूल झोंक सकता है। वहाँ तो सच्चाई, ईमानदारी, इन्द्रिय दमन, भूतदया की खोज है। जो मनुष्य इन धर्मों का आचरण करता है वह देवों का सखा बन जाता है क्योंकि उससे उनको जगत् के संचालन में सहायता मिलती है। सबकी शक्ति बराबर नहीं है पर कोई भी इतना दुर्बल नहीं है कि वह इस मार्ग पर थोड़ा बहुत न चल सके। जो इधर बढ़ने का संकल्प करता है इन्द्रादि देवगण उसका आगे बढ़कर स्वागत करते हैं जिस प्रकार बड़ा भाई छोटे भाई को चलना सिखाता है उसी प्रकार उसकी सहायता करते हैं। देवगण धर्म के रक्षक हैं। जो धर्म का सेवन करता है, उसके अर्थ और काम, योग और क्षेम का वह स्वयं निर्वाह करते हैं। देवों का यह स्वरूप जो उनका वास्तविक स्वरूप है, जनता के सामने आना चाहिये। प्राचीन आर्यों के सामने यही स्वरूप था। इस स्वरूप के प्रति श्रद्धा होती है। पुराणों का जो अंश इसके विरुद्ध देवों के प्रति अनादर का भाव उत्पन्न करता है उसको प्रक्षिप्त मान लेना चाहिये। इस प्रक्षेप में मुझे यह बात नहीं खटकती कि यह व्यासजी की कृति नहीं है। बालक भी अच्छी बात कहें तो वह मान्य हो सकती है पर जो बात मनुष्य की दुर्बलताओं को धर्म का आलम्बन दे और उसको अपने वर्तमान रूप से ऊपर उठने के लिए बराबर चाबुक न लगाती रहे, जो उसके दम्भ का पर्दा निरन्तर न फाड़ती रहे, वह धार्मिक शिक्षा कहलाने के योग्य नहीं है।

पुनरुक्ति अच्छी चीज नहीं होती परन्तु कभी-कभी उससे काम लेना ही पड़ता है। ब्राह्मणों के प्रति कड़वी भाषा का प्रयोग करना मुझे अच्छा नहीं लगता, परन्तु कटुता के डर से धर्म का परित्याग नहीं किया जा सकता। जो अपने कर्त्तव्य को भूल गया हो उसे उसका स्मरण दिलाना धर्म है। इसलिए मैं बारम्बार उसी राग को आलापता हूँ। मुझे वैदिक धर्म के प्रति जो श्रद्धा है और ब्राह्मण के ऊँचे पद के लिए जो स्नेह और आदर है वह मेरी धृष्टता का मार्जन कर देगा।

हमसे कहा जाता है कि आजकल कलियुग है। जहाँ तक कि यह काल का एक विभाग मात्र है, वहाँ तक हमें कुछ नहीं कहना है। मुहूर्त, घड़ी, पक्ष, वर्ष,

कल्प, पराद्धं सभी काल विभाग हैं और लम्बे कालों का निर्देश करने में युग जैसे बड़े मापदण्डों से सुविधा होती है। कई विद्वानों का मत है कि कलियुग का अब अन्त हो गया और सतयुग लग गया है। मुझे भी कुछ ऐसा ही ठीक जंचता है परन्तु यदि मान ठीक हो कि कलियुग 4,32,000 वर्षों का होता है जिनमें से अब तक केवल 5043 ही बीते हैं तो भी हमें कोई आपत्ति नहीं है।

कलियुग बुरा नहीं

परन्तु जो लोग कलियुग की बात करते हैं वे इस नाम के साथ इस बात को भी ध्वनित करते हैं कि यह युग पूर्ववर्ती युगों से बुरा है। उनके कथन के अनुसार इस युग में अधर्म का प्राधान्य रहेगा और इसमें जन्म लेने वाले मनुष्य इतरयुगीन मनुष्यों की अपेक्षा अल्पायु, अल्पवीर्य, अल्पमेध, और अल्पज्ञ होते हैं। उनसे पहिले लोगों की भाँति पुरुषार्थ-सिद्धि नहीं हो सकती, वह योगादि कठिन साधनों का अनुष्ठान नहीं कर सकते। मैं दृढ़ता के साथ कहना चाहता हूँ कि यह सारी बातें झूठी, सर्वथा निराधार हैं। मध्ययुगीन संस्कृत में लिखी गयी कुछ अनुष्टुप् छन्दोबद्ध पोथियों में ऐसी बातें मिलती हैं पर उन पुस्तकों को स्वतः प्रामाण्य नहीं प्राप्त है। न तो वेद का मंत्र भाग ऐसा कहता है, न उपनिषद् भाग। तर्क और प्रत्यक्ष अनुभव से भी इन बातों को आश्रय नहीं मिलता। इसलिए हम इनको मानने को प्रस्तुत नहीं हैं– हम कलियुग में जन्म लेने वाले किसी भी युगवालों से किसी भी बात में कम नहीं हैं।

कलियुग में अधर्म की प्रधानता होती है, यह कैसे माना जाए? अभी कलि को 5000 वर्ष बीते हैं, इनके इतिहास से तो ऐसा नहीं प्रतीत होता। शंकर प्रभृति सभी आचार्य कलियुग में ही हुए हैं। माना कि बीच-बीच में म्लेच्छादि विदेशी और विधर्मी हम पर शासन करते रहे हैं और धर्म को महान् आघात पहुँचाते रहे हैं परन्तु ऐसा दूसरे युगों में भी हुआ है। हिरण्यकश्यप और महिषासुर जैसे बलवान् धर्मद्वेषी कलियुग में तो हुए नहीं। इनके शासनकाल में सहस्रों वर्षों तक धर्म लुप्त प्राय हो गया, अग्निहोत्र बन्द हो गये, वेद भूगर्भ में विलीन से हो गये। कलियुग में इससे बुरा क्या हुआ? थोड़े दिनों के लिए बुरी आंधी आयी, चली गयी। फिर धर्म को सिर उठाने का अवसर मिला।

आयु और बल भी कम नहीं

यह बात किस आधार पर कही जाती है कि कलिकाल में लोग अल्पायु होते हैं? भोजन की कुव्यवस्था होने से इधर कुछ दिनों से भारत में लोग अल्पायु से हो गये हैं पर यह युग का दोष नहीं है, हमारी वर्तमान राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति का परिणाम है और थोड़े दिनों में दूर हो जायेगी। आज भी यूरोप के सम्पन्न देशों में लोग दीर्घायु होते हैं। यदि कलि में आयु कम होती तो कलि के आगमन से इस समय तक क्रमशः ह्रास दीख पड़ता। पर ऐसा तो नहीं है। हमको इधर पिछले कुछ सहस्र वर्षों के जिन लोगों के आयुष्कालों का पुष्ट प्रमाण मिला है वह आजकल के लोगों की

अपेक्षा दीर्घजीवी न थे।

हमको यह बात स्पष्ट दीख पड़ती है कि अब भी आयु की ऊपरी सीमा पहिले के बराबर पहुँची है। यह ऊपरी सीमा दो ढाई हजार वर्षों से ही बंध गयी हो या कलिकाल के ही लिए हो ऐसी बात नहीं है। श्रुति स्पष्ट करती है **शतायुर्वै पुरुषः** प्रत्येक द्विज सूर्य को अर्घ्य देकर प्रार्थना करता है कि **पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम्** इत्यादि इससे यह बात निश्चित है कि वेद के अनुसार अर्थात् आरम्भ से ही, मनुष्य की पूर्णायु सौ वर्ष ही है। अतः ऐसा मानने के लिए कोई कारण नहीं है कि कलियुग में मनुष्य की आयु की मर्यादा गिर गयी है।

ऐसा मानने का भी कोई कारण नहीं है कि आजकल के लोग पहिले वालों से शारीरिक बल में कम होते हैं। भोजनादि की व्यवस्था ठीक न होने से इस समय भारत के लोग पहिले से प्रायः नाटे, दुबले और दुर्बल हो गये हैं पर यह इस युग का धर्म नहीं है, यहाँ की विशेष परिस्थितियों का परिणाम है जो इनके बदलने पर बदल जायेगा। आज कल यूरोप के कुछ देशों के निवासियों की ऊँचाई और दैहिक बल में वृद्धि हो गई है। ढाई तीन सौ वर्ष के पुराने कपड़े, गहने और हथियार अब भी मिलते हैं। उनसे भी यही ज्ञात होता है कि तत्कालीन लोग प्रायः आज जैसे ही थे। मोहनजोदड़ो में पांच सहस्र वर्ष अर्थात् कलियुग के आरम्भ काल के घर मिले हैं, पर वह भी आजकल जैसे मनुष्यों के रहने योग्य हैं। वहीं गेहूँ के दाने मिले वह भी आजकल के गेहूँ के बराबर थे। भूगर्भ की ऐसी चट्टानों में जो बीसों सहस्र वर्ष पुरानी हैं नर-कंकाल के टुकड़े मिले हैं। उनसे भी यही प्रतीत होता है कि शरीर की लम्बाई और शक्ति में कोई उल्लेख्य अन्तर नहीं हुआ है। यों आज भी वह लोग जो भरपेट अच्छा खाना पाते हैं बलवान् होते हैं।

यह भी नहीं माना जा सकता कि आजकल बुद्धि-बल घट गया है। पहिले समय में आज की भाँति रेल-तार कहाँ था, बिजली के प्रकाश का किसको पता था? एक पुष्पक विमान की इतनी गाथा गायी जाती है, आज एक-एक देश में कई सहस्र वायुयान हैं। धृतराष्ट्र को संजय ने व्यास जी के आशीर्वाद से युद्धस्थल का समाचार सुनाया, आज घर-घर रेडियो द्वारा ताजा समाचार सुना जा सकता है और अब तो दूरस्थ वस्तुओं का तत्काल चित्र भी लिया जा सकता है। बिना मंत्र बल के ही सैंकड़ों को मारने वाले और बेहोश करने वाले शस्त्र निकले हैं जिनमें से किसी किसी का निशाना दस पन्द्रह कोस तक जाता है। जन्मान्ध मनुष्य तक को पढ़ाया जाता है। शरीर के भीतर से रोगी अवयव निकालकर कृत्रिम अवयव बैठा दिये जाते हैं। यह बात बुद्धिबल की कमी नहीं सिद्ध करती। आजकल के लोग प्राचीन शास्त्रों को पढ़ जाते हैं और उनके साथ-साथ सैंकड़ों नयी पुस्तकों को भी देखते हैं। यह मेधा के उपचय का प्रमाण है, ह्रास का नहीं। फिर कैसे मान लिया जाये कि आज हमारा बुद्धिबल पहिले के लोगों से कम है।

•

(क्रमशः)

हम भारत से क्या सीखें?

द्वितीय भाषण

– प्रो० मैक्समूलर

हिन्दुओं का चरित्र–

(पूर्व अंक का शेष)

फिर कहा गया है "जैसे किसी गढ़े के आर-पार रखी गयी तलवार के धार पर चलने वाला व्यक्ति निरन्तर इस भय से त्रस्त रहता है कि कहीं वह छिटक कर गढ़े में न गिर पड़े, वैसे ही मनुष्य को सदा सचेष्ट रहना चाहिये कि कहीं वह सत्यच्युत होकर असत्य-पंक में न फँस जाय, क्योंकि असत्य ही पाप है।"

कालान्तर में हम देखते हैं कि हिन्दुओं का सत्य के प्रति सम्मान एवं उनकी सत्यनिष्ठा उस सीमा तक बढ़ गयी कि अनिच्छा पूर्वक या भावना रहित रूप से की गयी प्रतिज्ञा भी उनको बाधित करने लगी थी। कठोपनिषद् में एक कथा है कि– "एक ब्राह्मण ने सर्वहुत यज्ञ किया। उस यज्ञ का यह विधान है कि इसमें मनुष्य के पास जो कुछ भी रहता है वह सब दान में दे दिया जाता है। यज्ञ की समाप्ति पर स्वयं उसके पुत्र ने कहा कि ब्राह्मण ने कुछ रख लिया है अतः उसका यज्ञ पूर्ण नहीं हुआ। पिता ने पुत्र से पूछा कि आखिर कौन सी ऐसी वस्तु शेष रह गयी जिसे दान में नहीं दिया गया। पुत्र ने कहा "एक तो अभी मैं बचा हूँ।" पिता स्तम्भित हो उठा। यद्यपि यज्ञ का संकल्प करते समय पुत्र बलिदान की भावना उसके मन में नहीं थी फिर भी पुत्र का बलिदान करने के लिये उसने अपने को बाधित समझा और उसका भी बलिदान दे दिया। बलि के बाद वह पुत्र यमराज के पास पहुँचा। यम ने प्रसन्न होकर उसे तीन वर माँगने को कहा। पुत्र ने एक वरदान में अपना जीवन माँगा, दूसरे में बलिदान के रहस्यों का ज्ञान माँगा तथा तीसरे वरदान में यह माँगा कि उसे यह ज्ञान हो जाय कि मृत्यु के पश्चात् क्या होता है। यमराज ने तीसरा वर देने से टालमटोल करना चाहा, परन्तु वे भी तो प्रतिज्ञा से बंधे हुए थे। उसके बाद दोनों में मृत्यु और जीवन पर अनेक प्रकार की वार्ताएँ हुई जिनका संस्कृत के प्राचीन साहित्य में गौरवपूर्ण स्थान है।[1]

रामायण का समूचा महाकाव्य ही दशरथ की प्रतिज्ञा पर आधारित है, जिन्होंने प्राण दे दिया, परन्तु प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी। राम को वन भेजने में दशरथ को मर्मान्तक पीड़ा हुई थी, परन्तु वचन भंग का दोष उन्होंने अपने ऊपर नहीं लगने दिया। दशरथ की मृत्यु के बाद भरत ने भी गद्दी पर बैठना स्वीकार नहीं किया और राम को लौटाना चाहा, परन्तु राम भी पिता के वचन को कैसे तोड़ते। इस अवसर पर राम और जाबालि नामक ब्राह्मण की वार्ता के कुछ अंशों को उद्धृत करने के लोभ का मैं

1. शायद लेखक का तात्पर्य नाचिकेतोपाख्यान से है।

संवरण नहीं कर पा रहा हूँ।

वह ब्राह्मण पुरोहित भी थे और सभासद् भी। उन्होंने रघुवंशी कह कर राम को सम्बोधित किया और कहा "हे राम आप रघुवंशियों में श्रेष्ठ हैं। आपके मनोभाव सज्जनोचित हैं। आपका चरित्र पवित्र है आप इस प्रकार के व्यर्थ विचारों में क्यों पड़ते हैं? क्या यहाँ कोई किसी का सम्बन्धी या कुटुम्बी है? क्या यहाँ पर कोई किसी का पुत्र, पिता या भाई है? मनुष्य अकेला पैदा होता है और अकेला मरता है। अतः यहाँ पर जो कोई किसी को माता, पिता या बन्धु कहता है वह अज्ञानी है, क्योंकि कोई किसी का कुछ नहीं है। अतः आपको अपने पिता का राज्य छोड़कर इस प्रकार का दुःखपूर्ण जीवन नहीं बिताना चाहिये, जिसमें आपको अनेक परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा। आप समृद्धिपूर्ण अयोध्या के राजा बनें। आपके पिता दशरथ वास्तव में आपके कोई नहीं थे और न आप उनके कोई थे। राजा कुछ और थे और आप कुछ और हैं। इसलिये आप वही करें जो करने को आपको कहा जाता है। तथा निश्चित दिनों को आप अपने पितरों को तिलोदक दें, परन्तु **यह भी जान लें कि यह सब अन्न की बरबादी ही है, क्योंकि मृत मनुष्य कुछ नहीं खा सकता। यदि यहाँ एक आदमी का खाया हुआ वहाँ पर मृत पुरुष के पेट में जाता है तो पर्यटकों के लिये भी उनके घर वालों को श्राद्धदान दे देना चाहिये, जिससे पर्यटन काल में वे खाने-पीने के झंझट से मुक्त रहें।** ये वेद केवल ग्रन्थ मात्र हैं, जो मनुष्यों को त्याग, तपस्या, योग एवं दान का उपदेश देते हैं। ये चतुर लोगों द्वारा इसलिये रचे गये हैं कि वे और उनकी सन्तानें बिना श्रम के ही अपनी जीवन यात्रा पूरी कर सकें। आर्ष वचन कहीं स्वर्ग से नहीं आते। आप केवल उसे ही स्वीकार करें, जो तर्कों के प्रकाश में ठीक जान पड़ता हो। आप उसे ही ठीक मानें जिसका अनुभव आपकी इन्द्रियाँ कर सकें। जो कुछ भी अनुभवगम्य नहीं है, उसे आप त्याग दें। .... इहलोक ही परलोक है अतः जो कुछ भी मिल सके उसका आनन्द यहीं पर उठा लेना चाहिये, क्योंकि ये विलास की वस्तुएँ प्रत्येक शुद्धात्मा को नहीं मिला करतीं। प्रायः पवित्रात्माओं को अत्यधिक कष्ट सहने पड़ते हैं तथा पातकी लोग इस लोक में प्रायः सुख-भोग करते दिखायी पड़ते हैं।''

ये भौतिकवादी मनोभाव विचित्र अवश्य दिखायी पड़ते हैं। उनकी विचित्रता तब और भी बढ़ जाती है जब ये एक ब्राह्मण के मुख से निकलते हैं। यहाँ पर कवि ने एक ऐसे सभासद् का चित्रण किया है, जिसके पास प्रत्येक बात का एक तर्क होता है और जिसकी प्रत्येक बात राजा को प्रसन्न करने के लिये होती है।

उपरोक्त बातों का राम ने जो उत्तर दिया है तनिक उसे भी देखिये। राम ने कहा "आपने जो कुछ मेरे लिये कहा है, वह उचित भी है और आदरणीय भी परन्तु वास्तव में वह आपकी बातों के विपरीत ही पड़ता है। जो पातकी जन सनातन नियमों के विपरीत आचरण करता है, उसे इस लोक में प्रतिष्ठा नहीं

मिलती। मनुष्य के सत् और असत् कार्य ही उसे भला या बुरा, वीर या कायर, पवित्रात्मा या अपवित्रात्मा बनाते हैं। राजनीति में राजा के कार्यों में सत्य[2] तथा दयालुता ही स्मरणीय बनाते हैं। अतः सत्य ही राजा के कार्यों की कसौटी है। सत्य ही संसार का आधार है। सन्तों ने और देवताओं ने सत्य की स्तुति की है। राजा के लिये सत्य ही सर्वाधिक पूजनीय है। जो व्यक्ति इहलोक में सत्य बोलता है उसे सर्वोच्च और शाश्वत पद प्राप्त होता है। असत्यभाषी व्यक्ति से मनुष्य उसी प्रकार दूर हट जाते हैं जैसे साँप से। इहलोक की अच्छाइयों में सत्य ही मुख्य तत्व है। सत्य ही प्रत्येक वस्तु का आधार है। सत्य ही संसार का प्रभु है। पवित्रता सत्य पर आधारित रहती है। प्रत्येक पदार्थ की आधारशिला सत्य ही है, सत्य से उच्च कुछ भी नहीं है। तब मैं सत्य से पराङ्मुख क्यों बनूँ और अपने पिता जी की सत्यता की रक्षा क्यों न करूँ। न तो कौशल से, न धोखे से और न अज्ञानता से मैं सत्य के दुर्ग को तोड़ूंगा। मैं अपने पिता द्वारा की गयी सत्य प्रतिज्ञा का अवश्य ही पालन करूँगा। मैंने वन में इसी भाँति रहने की प्रतिज्ञा अपने पिता के सामने की है, तब फिर मैं उस प्रतिज्ञा को तोड़ कर भरत की कही हुई बात को कैसे मान लूँ?"

महाभारत भारत का दूसरा महाकाव्य है। इस महाकाव्य में अनेक ऐसे उपाख्यान हैं, जिसमें सत्य को ही सर्वोच्च सम्मान दिया गया है और जिनमें तत्कालीन पुरुष दिये हुए वचन के प्रति दास्यभाव सा रखते हुए दिखायी पड़ते हैं। महाभारत में भीष्म की मृत्यु एक महत्वपूर्ण घटना है। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे कभी भी किसी स्त्री पर आघात न करेंगे। वे शिखंडी को स्त्री मानते थे और उसका सामना होने पर वे शस्त्र रख कर मृत्यु को आवाहित कर लेते हैं।

यदि मैं स्मृतियों से उद्धरण देना प्रारम्भ करूँ या और भी परवर्ती ग्रन्थों से उद्धरण दूँ तो आप देखेंगे कि उन तमाम उद्धरणों में निरपवाद रूप से सत्य की ही प्रतिष्ठा की गयी होगी।

मैं इस सत्य को दबाना नहीं चाहता कि भारत में ही कुछ परिस्थितियों में असत्य भाषण की अनुमति दी गयी है। स्मृतिकारों ने कितनी ही परिस्थितियों में इसे क्षम्य माना है। इसी प्रकार की व्यवस्था देते हुए गौतम का कथन है कि "क्रोध के वशीभूत जन द्वारा किया गया असत्य भाषण या अत्यधिक आनन्द के उद्वेग में कहा गया असत्य, भय, पीड़ा या दुःखावेग में बोला गया झूठ, बच्चों, वृद्धों या भ्रमित मनुष्यों द्वारा कहा गया असत् वचन मद्यपों या पागलों का झूठ अपने कर्ता को पतनशील नहीं बनाते। हम यों भी कह सकते हैं कि उपरोक्त परिस्थितियों में असत्य भाषण क्षम्य अपराधों की श्रेणी में रखा गया है।" •

(क्रमशः)

1. देखिये वाल्मीकि रामायण "सत्यमेवानृशंस्यं च राज्यवृत्तम् सनातनम्। तस्मात् सत्यात्मकम् राज्यम् सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः" हिंसारहित सत्य ही राजा का सनातन धर्म है। राज्य सत्यात्मक है सत्य में ही जगत् प्रतिष्ठित है। – अनुवादक

नरेन्द्र मोदी जी के विजयोत्सव में सम्मिलित पाणिनि कन्याएँ

14-18 जून, बी.एच.यू. में तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित बैठक में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित आचार्या नन्दिता शास्त्री

पाणिनि महाविद्यालय के ग्रीष्मकालीन सत्र में कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त करती कन्याएँ

आत्मरक्षा की दृष्टि से विद्यालय में आयोजित कैम्प में ताईक्वांडो का प्रशिक्षण लेती कन्याएँ

ग्रीष्मकालीन शिविर में प्रशिक्षणार्थ आयी हुई आसाम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, नेपाल आदि की कन्याएँ

गुड़गाँव में आयोजित महिला जागृति सम्मेलन में कन्याओं के साथ यज्ञ सम्पन्न कराती आचार्या प्रीति विमर्शिनी

दिनांक 8 अप्रैल रामनवमी 2014

विद्यालय में नवनिर्मित अन्ताराष्ट्रिय महिला छात्रावास के उद्घाटन समारोह की विभिन्न झलकियाँ